या देवी सर्वभूतेषु, मातृरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः।।

चिन्तन

(परमहंस योगीराज श्री शक्तिपुत्र जी महाराज)

प्रकृतिसत्ता ने हम सभी को सर्वशक्तिमान बना रखा है, तो सर्वशक्तिमान की सामर्थ्य को आप क्यों प्राप्त नहीं कर पा रहे हैं? प्रकृति ने तो आपको सबकुछ दे रखा है, मगर आप एक के ऊपर एक, एक के ऊपर एक आवरण डालते चले जा रहे हैं और वे आवरण आपको पतन के मार्ग पर लेजा रहे हैं। इसलिए मैं आप सभी को बार-बार सचेत करता हूँ कि उस मार्ग में न भागो, जिस मार्ग में भौतिकतावादी समाज भागता चला जा रहा है। अपने जीवन में कुछ ठहराव लाओ। विचार करो कि हमें मानवजीवन मिला है, तो हमारा धर्म और कर्म क्या बनता है? जिस मार्ग में पूरी दुनिया भागती चली जा रही है, क्या उसी मार्ग में हम भागते चले जायें? हमारा कल्याण किस तरह होगा, हमारा हित कैसे होगा? क्या आप सभी का धर्म और कर्म नहीं बनता कि एक बार विचार करें कि हम किधर जा रहे हैं? विनाश के मार्ग में या विकास के मार्ग में, प्रकृतिसत्ता के नज़दीक या प्रकृतिसत्ता से दूर? चूंकि जन्म-दर-जन्म जो आवरण पड़ते चले जाएंगे, उनसे आप सिर्फ़ पतन के मार्ग पर जाएंगे।

सिद्धाश्रम पत्रिका

वर्ष–17, अंक–02, फ़रवरी 2024

सम्पादक
पूजा शुक्ला
उप सम्पादक
अजय अवस्थी
कार्यकारी सम्पादक
आशीष शुक्ला
प्रबंध सम्पादक
सौरभ द्विवेदी
रजत मिश्रा
सहयोगी सम्पादक मण्डल
सन्तोष मिश्रा
बृजपाल सिंह चौहान
प्रचार–प्रसार प्रतिनिधि
प्रमोद तिवारी

रजि. क्रमांक
MPHIN/2008/37172
स्वामित्व एवं प्रकाशक
त्रिशक्ति प्रोडक्ट्स प्रा. लि.
पो.– मऊ, तह.– ब्यौहारी
जिला– शहडोल (म.प्र.) से मुद्रित

विवरणिका

क्र.	शीर्षक	पृष्ठ क्रमांक
1–	चिन्तन	1
2–	विवरणिका	2
3–	सम्पादकीय	3
4–	ऋषिवाणी: नशामुक्ति महाशंखनाद	4
5–	नया वर्ष भारत को ऊँचाइयों की ओर ...	13
6–	आदिशक्ति जगत् जननी जगदम्बा की ...	17
7–	22 जनवरी की राममय हुआ सिद्धाश्रम...	20
8–	सिद्धाश्रम स्थापना दिवस	22
9–	गणतंत्र दिवस समारोह, सिद्धाश्रम	32
10–	नशाविरोधी जनान्दोलन	36
11–	अध्यात्म गंगा/गीताज्ञान	39
12–	योगजगत्	40
13–	जनजागरण	42
14–	आत्मज्ञान	45
15–	आयुर्वेद	46
16–	फ़रवरी/मार्च 2024 के महत्त्वपूर्ण व्रत एवं पर्व	47
17–	भावगीत	48

मूल्य–भारत में एक प्रति 30 रुपये, वार्षिक सदस्यता शुल्क 360 रुपये, दसवर्षीय सदस्यता शुल्क 3400 रुपये एवं बीसवर्षीय सदस्यता शुल्क 6700 रुपये। e-mail: subscription.sp@gmail.com

पूजा शुक्ला

सम्पादकीय

मानवता के पथ पर चलने के लिए शरीर की पवित्रता, आहार और विचारों पर ध्यान रखना बहुत ज़रूरी है। इस विषय में सद्गुरुदेव श्री शक्तिपुत्र जी महाराज का चिन्तन है कि ''शरीर की पवित्रता से तात्पर्य बाह्य शुद्धता के साथ ही अन्तःकरण भी पवित्र होना चाहिए और आहार से भी शरीर की पवित्रता का गहरा संबंध है। अतः आहार पर भी विशेष ध्यान रखने की आवश्यकता है। हर पल सतर्क रहें कि कैसा आहार लें, जिससे शरीर पवित्र रहे?

शरीर की पवित्रता और आहार के साथ अपने विचारों पर तो और भी अधिक सतर्क रहें कि मन में किस तरह के विचार चल रहे हैं? सात्विकता, शुद्धता के विचार ही आपको अध्यात्मिक उन्नति के पथ पर ले जायेंगे। जैसे कि लोभ की भावना जब तक नहीं जगेगी, तब तक चाहे करोड़ों की सम्पत्ति सामने पड़ी हो, आप उसे छुएंगे तक नहीं। क्रोध की भावना जब तक नहीं जगेगी, तब तक आप किसी को एक तमाचा भी नहीं मार सकते। इसी तरह काम की भावना जब तक नहीं जगेगी, तब तक आपके क़दम विकारों की ओर नहीं बढ़ेंगे।''

विचार तो आएंगे, लेकिन सबसे बड़ी बात यह है कि दोषपूर्ण विचारों को अपने मनमस्तिष्क से झटककर मन को अच्छे विचारों की ओर मोड़ना। इस दिशा में आपको प्रयास करते रहना है, जिससे आप पतन के मार्ग पर न जा सकें और गुरुदेव जी के बताए मार्ग पर पूरी श्रद्धा व निष्ठा से बढ़ सकें।

जय माता की - जय गुरुवर की

ऋषिवाणी

परमहंस योगीराज श्री शक्तिपुत्र जी महाराज

प्रवचन श्रृंखला क्रमांक - 194

शक्ति चेतना जनजागरण शिविर, लखनऊ (उत्तरप्रदेश) दिनांक 21 फ़रवरी 2016

नशामुक्ति महाशंखनाद

क्रमशः...

याद रखो कि कोई भी धर्म तब तक सुरक्षित नहीं है, जब तक सम्प्रदायिकता की आग जलाई जाती रहेगी और यदि हम अपने हिन्दूधर्म की रक्षा करना चाहते हैं, तो सबसे पहले हमें सम्प्रदायिकता से बचना होगा, बच्चों को सम्प्रदायिकता की आग से बचाना पड़ेगा, तोड़फोड़ की राजनीति से बचाना पड़ेगा, दंगे-फसाद से बचाना पड़ेगा। यदि हम बच्चों को नहीं बचा पाये, तो जिन बच्चों के अंदर हम दूसरे धर्मों को नष्ट करने की उग्र मानसिकता भर देंगे, वह उग्र मानसिकता एक दिन आपके ही घर-परिवार को नष्ट करेगी, एक दिन आपके ही धर्म को नष्ट करेगी। उससे बचना है, तो अपने बच्चों को सद्विचार दो, उन्हें अच्छी शिक्षा, अच्छे संस्कार दो। मैं इस मंच से भी आप लोगों का आवाहन करता हूँ कि ग़लत बातों पर ज़्यादा ध्यान मत दो, अश्लील गीतों और फिल्मों में समय मत दो, बल्कि 'माँ' के अच्छे भजन सुनो, 'माँ' की स्तुति करो, 'माँ' की वन्दना करो, अपने मोबाइल में 'माँ' के भजन रखो, डायलटोन व रिंगटोन में निरर्थक फिल्मी गीत-संगीत मत रखो, क्योंकि जिस तरह के अश्लील गीत आपके मन में गूंजेंगे, आपके बच्चों के मन में गूंजेंगे, उसी तरह के विचार बनेंगे।

आज्ञाचक्र में कितनी बड़ी ऊर्जा है, इसका तुम्हें अहसास ही नहीं है। यदि आपकी रुमाल खो जाये, आपने अपना चश्मा निकालकर कहीं रख दिया हो, आप अपनी पुस्तक कहीं रखकर भूल गए हों और आपको ध्यान न

आ रहा हो, तो आप तुरन्त आँख बंद करके सोचोगे, तो आज्ञाचक्र पर ही तो ध्यान लगाते होगे? आपको मालूम है कि जब हम सोचने का प्रयास करेंगे, तो वह चीज़ हमें याद आ जायेगी। कोई न कोई सुपर कम्प्यूटर हमारे अंदर बैठा है, जो हमारी प्रत्येक क्रिया को फीड कर रहा है। जो कर्म हम पहले कर चुके हैं और जो अब कर रहे हैं, वह उसमें अंकित है और हम उसको पलटकर पढ़ भी सकते हैं। कितना बड़ा चक्र आपके अन्दर है और आपको उसका ज्ञान भी है कि हम पीछे के पन्नों को बिना बाहर के संसाधनों के पलट सकते हैं और वह बात या घटना आपको याद आ जाती है। आप अपने किसी परिजन या इष्टमित्र का नाम भूल रहे हों, तो आप आँख बंद करके थोड़ा सा सोचते हो और वह नाम आपको याद आ जाता है। अतः इस चक्र को और प्रभावक बना लो, लेकिन इसके लिए नशे-मांसाहार से मुक्त चरित्रवान् जीवन जियो, नित्य पाँच से दस मिनट ध्यान में बैठना प्रारम्भ करो, आपके अन्दर की ऊर्जाशक्ति बढ़ती चली जायेगी।

आप चाहे जितने बड़े तनाव में हों, उलझन हो रही हो, सिरदर्द बढ़ रहा हो, बस यदि आप थोड़ी देर आज्ञाचक्र में 'माँ' का ध्यान करके बैठोगे, तो आपका पूरा दर्द सिमटकर आज्ञाचक्र में आयेगा और आज्ञाचक्र से वह नष्ट हो जायेगा। आज्ञाचक्र राजाचक्र कहलाता है। बड़े-बड़े तथाकथित कुण्डलिनी जगाने वाले कहते हैं कि मूलाधार चक्र में ध्यान करो, स्वाधिष्ठान चक्र में ध्यान करो, मणिपूर चक्र में ध्यान करो! मैं कह रहा हूँ कि केवल राजाचक्र की शरण में आ जाओ, यही कमाण्डिंग चक्र है, इसको माध्यम बना लो, नीचे के चक्रों की ऊर्जा अपने आप खिंचती चली आयेगी। केवल आज्ञाचक्र को माध्यम बनाओ और कहीं कुछ सोचने की ज़रूरत नहीं है। जब आप ज़्यादा साधना की ऊँचाइयों में बढ़ोगे तथा वैसे तो गृहस्थ का जीवन जीने वालों में विरले ही लोगों को समय मिल पाता है एवं आपको सामान्य ऊर्जा तो चाहिए और सामान्य ऊर्जा में जो आपके नीचे के चक्रों की ऊर्जा है, वह सहजभाव से आपको प्राप्त होती चली जायेगी। शक्तियोग पुस्तक जो मैंने समाज को दी है, प्रमाणिकता के आधार पर कुछ ज्ञान मैंने उसमें दिया है, जो आपके लिए बहुत बड़ा ज्ञान है, यदि आप उस पर अमल करोगे, उसे जीवन में ढालोगे, तो बहुत कुछ ऊर्जा प्राप्त कर पाओगे।

मैं कह रहा हूँ कि यदि आपको कुछ नहीं मालूम है कि कैसे कुण्डलिनीजागरण होता है, कैसे इन क्रमों को किया जाता है? तो आप केवल आज्ञाचक्र में ध्यान लगाकर नित्यप्रति बैठना शुरू कर दो, ॐ और 'माँ' का उच्चारण करो, फिर 'माँ' का ध्यान लगाकर बैठो। इस प्रक्रिया को अपने दैनिक जीवन के अभ्यास में ले आओ। जब आप शांतचित्त होकर बैठोगे, तो आप देखोगे कि आपके मेरुदण्ड में तनाव आता चला जायेगा, आपको लगेगा कि मूल स्थिति से मेरी मेरुदण्ड एक-दो इंच बढ़ गई है।

तुम विकारात्मक जीवन जीकर कामेन्द्रियों में चैतन्यता महसूस कर लेते हो! कभी अपनी सुषुम्ना नाड़ी की चैतन्यता का अहसास करो कि जब हम सतोगुणी प्रवृत्ति में आ जाते हैं, 'माँ' की आराधना करने लगते हैं, तो हमारे शरीर के अंदर की नसें ऊपर की ओर खिंचने लगती हैं, हमारे अंदर चैतन्यता आ जाती है। क्रोध-आवेश में जब आ जाते हो, तो आपको पूरा शरीर तमतमा जाता है। आपको तमोगुण का भी ज्ञान है कि जब तमोगुण हावी होता है, तो आपकी भुजाएं फड़कने लगती हैं। एक बार सतोगुणी ऊर्जा का भी अहसास करके देखो, शरीर आनन्द से भर जायेगा, शरीर चैतन्यता से भर जायेगा, आपको लगेगा कि हमारे शरीर की एक-दो इंच लम्बाई बढ़ गई है, मूलाधार चक्र से लेकर सहस्रार चक्र तक खिचाव बढ़ने लगेगा और वह खिचाव आपकी नानाप्रकार की बीमारियों को दूर कर देगा, आपके कार्य करने की

क्षमता को बढ़ा देगा। आप जहाँ दो घण्टे कार्य करने में थकावट महसूस करते हो, वहीं दस घण्टे कार्य करने के बाद भी थकावट नहीं लगेगी। ये बहुत सहज-सरल क्रम हैं, इन क्रमों को अपनाकर तो देखो।

सच्चे योगी बनो, केवल आसनों में उछलकूद करने से योगी नहीं बनते। आसन के लिए भी आप नित्यप्रति आधे से एक घण्टे का समय अवश्य दो, मगर बड़ा योग है अंतरंग योग। अपने आज्ञाचक्र में ध्यान लगाओ, मनमस्तिष्क को एकाग्र करो। अभी थोड़ी देर के बाद आरती होगी, उसका लाभ मनमस्तिष्क को एकाग्र करके लेना। चूंकि मैं इन्हीं आरतियों के लिए आपको बुलाता हूँ कि आपका अंतःकरण विचारों के माध्यम से, जैकारों के माध्यम से, 'माँ' के गीतों के माध्यम से, यहाँ के वातावरण की तरंगों के माध्यम से थोड़ा-बहुत चैतन्यता प्राप्त कर सके, आपका मन एकाग्र हो सके, आपके अंदर कुछ सद्विचार बैठ सकें। मन को एकाग्र करके 'माँ' की आराधना, 'माँ' की आरती करो, तो वह आपके लिए फलीभूत होगी।

साधना और ध्यान के क्रम नित्य साधना की पुस्तक में दिए हुए हैं तथा उसमें त्रिशक्ति महामंत्र भी दिया गया है, जिस मंत्र की इतनी बड़ी ऊर्जा है कि जिसकी आप कल्पना भी नहीं कर सकते। आने वाले समय में मैं समाज को उसका भी ज्ञान दूंगा। उसमें अलौकिक ऊर्जा है। मारण, मोहन, वशीकरण, सम्मोहन, आप सबकुछ कर सकते हो, मगर मारण, मोहन, वशीकरण व सम्मोहन का तात्पर्य आप तुरन्त यह सोच लेंगे कि अमुक व्यक्ति मेरा शत्रु है, तो मैं उसको मार दूँ या मैं किसी को अपनी ओर सम्मोहित कर लूं! जबकि, इनका उपयोग अपने कुसंस्कारों को नष्ट करने के लिए किया जाता है, अपने स्वयं की चेतना को सम्मोहित करने के लिए उपयोग किया जाता है, अपनी इन्द्रियों को अपने वशीभूत करने के लिए उपयोग किया जाता है और यदि तुम स्वयं के विजेता बन गए, तो तुम विश्वविजेता सहज रूप से बन जाओगे। वह त्रिशक्ति महामंत्र भी प्रदान किया गया है, जिसके माध्यम से आप अपनी इन्द्रियों को संयमित कर सकते हो, अपने विचारों को संयमित कर सकते हो, अपने कुविचारों को नष्ट कर सकते हो। समय आने के साथ अनेक रहस्यों को और समाज को प्रदान करूंगा, मगर जितने क्रम अब तक प्रदान किए गए हैं, पहले उन पर अमल करो।

भगवती मानव कल्याण संगठन के कार्यकर्ताओं को हरपल मेरा निर्देशन है कि जन-जन के कल्याण के लिए, मानवता की सेवा के लिए अधिक से अधिक अपना समय निकालो। न तुम कुछ लेकर आये हो, न कुछ लेकर जाओगे। पूर्व के संस्कार आज तुम्हारी मदद कर रहे हैं और आज के सत्कर्म तुम्हारी आगे की यात्रा में मदद करते चले जायेंगे। अतः इस मानवता की सेवा के लिए अधिक से अधिक समय निकालो। लोगों के यहाँ जाओ, लोगों को नशामुक्त जीवन जीने के लिए प्रेरित करो, उन्हें धर्मरक्षा, राष्ट्ररक्षा व मानवता की सेवा करने के लिए प्रेरित करो, बच्चों को अच्छे संस्कार दो। जहाँ जाओ, जहाँ बैठो, वहाँ बच्चों से, वृद्धों से मिलो, तो उनको बताओ कि आपको क्या करना है? यदि वे वृद्ध हों, तो उन्हें प्रेरित करो कि पूरा जीवन तो आपने गुज़ार दिया और शेष बचा हुआ जो जीवन है, उसे तो मानवता के कल्याण में लगा दो, उसे तो अनीति-अन्याय-अधर्म के ख़िलाफ़ आवाज़ उठाने में लगा दो, उसे तो अपने पीछे खड़े बच्चों के मार्गदर्शन में लगा दो।

युवकों को बताओ कि यह जो युवावस्था मिली हुई है, उसका उपयोग धर्मरक्षा, राष्ट्ररक्षा और मानवता की सेवा के लिए करो, यह आपकी जवानी स्थिर नहीं रहेगी, यह आपकी युवावस्था टिकाऊ नहीं रहेगी, अतः इसका सत्कर्मों में भरपूर उपयोग कर डालो। बच्चे हों, तो उन्हें प्रेरित करो कि वे अच्छी शिक्षा प्राप्त करें, धर्म का पालन

करें, अच्छे संस्कार सीखें और अच्छे नागरिक बनें। उन छोटे-छोटे बच्चों को प्रारम्भ से ही संस्कार दो, उन्हें प्रेरित करो कि नशे-मांसाहार से मुक्त चरित्रवान्, चेतनावान् जीवन जियें। उसके लिए तुम्हें डोर-टू-डोर जा-जाकर सम्पर्क करना है। इस दिशा में कार्य करने की ज़रूरत है, लेकिन फल की कामना मत करो, फल तो तुम्हारे पीछे-पीछे दौड़ेगा। हमेशा इस बात का ध्यान रखिए कि निष्काम कर्म कुछ होता ही नहीं है। जब हम कोई सतोगुणी या परोपकार का कार्य करते हैं, तो हम कहते है कि हम निष्काम कर्म कर रहे हैं, मगर इस शरीर से कोई भी कर्म निष्काम कर ही नहीं सकते हो। यदि आपके अंदर इच्छाशक्ति आयेगी कि हमें उठकर यहाँ से वहाँ जाना है, तभी आप अपने शरीर को उठाओगे और दो क़दम चलोगे। जब आपको पढ़लिख करके कुछ बनना होगा, तभी आपकी पढ़ाई की इच्छाशक्ति जाग्रत् होगी।

चिन्तन प्रदान करते हुए सद्गुरुदेव परमहंस योगीराज श्री शक्तिपुत्र जी महाराज

भौतिक जगत् की नाशवान चीजों की कामनाओं को छोड़ दो और सतोगुणी, परोपकारी, जनकल्याणकारी भावना के साथ स्थाई कामनाओं को अपने अंदर पैदा करो तथा अपने शरीर की शक्ति-सामर्थ्य को जनकल्याणकारी कार्यों में लगाओ, 'माँ' की आराधना में लगाओ, छोटे-छोटे बच्चों को 'माँ' की आराधना की ओर प्रेरित करो। आज छोटे-छोटे बच्चे 'जय माता की' का जयघोष करते हैं। कोई मेरी यात्रा में चलकर तो देखे। लोग कहते हैं कि युवा भटक रहा है और मैं कह रहा हूँ कि मैं जिस गली-चौराहे से गुज़र जाता हूँ, वहाँ के युवाओं को देखो कि उनमें अपने गुरु के प्रति कैसी तड़प और भावना रहती है, 'माँ' के प्रति क्या तड़प रहती है, किस भाव से वे हाथ जोड़ते हैं, किस भाव से नमन करते हैं और यह सब कोई भी मेरी यात्रा में चलकर देख सकता है। यह प्रवाह जब अपनी गति, अपनी चरमसीमा पर

आयेगा, तो अपने आप समाज में परिवर्तन आता चला जायेगा। इसी के लिए मैं एकांत साधनारत रहता हूँ, इसीलिए मैं अपने शरीर को तपा रहा हूँ। समाज के बीच कम समय अवश्य देता हूँ, मगर मैं समाज से कभी दूर नहीं हूँ, अपने भगवती मानव कल्याण संगठन के कार्यकर्ताओं से दूर नहीं हूँ। मानवता जहाँ भी तड़प रही है, कराह रही है, उसका कल्याण हो, इसके लिए जो संगठन से जुड़े हैं और जो नहीं जुड़े हैं, सभी के कल्याण के लिए मैं नित्य साधना करता हूँ कि उनका कल्याण हो सके।

तप में बहुत बड़ी शक्ति होती है और हमारे ऋषि-मुनियों ने इस तप की शक्ति का अहसास एक बार नहीं, बल्कि अनेक बार कराया है। नये स्वर्ग की रचना करने की सामर्थ्य हमारे ऋषि-मुनियों में थी, जनकल्याण में हंसते-हंसते अपने शरीर की हड्डियों का भी दान करने वाले आत्मबली ऋषि-मुनि रहे हैं। आत्मबल के माध्यम से सबकुछ होता रहा है। मानव के पास बहुत बड़ी शक्तियाँ रही हैं। इसी भूमि पर गंगापुत्र भीष्म पितामह जैसे लोग पैदा हुए हैं, कर्ण जैसे महाबली पैदा हुए हैं, अर्जुन जैसे वीर योद्धा पैदा हुए हैं, पन्नाधाय जैसी नारियाँ पैदा हुई हैं, सती सावित्री, गायत्री सब यहीं पैदा हुई हैं। क्या आज पैदा नहीं हो सकते, क्या आज हम अपने आपको नहीं जगा सकते? नर हो या नारी, तुम सब एकसमान हो, तुम सबके अंदर एकसमान आत्मशक्ति है, एकसमान कार्य करने की क्षमता है। एक बार दृढ़ विचार करके ठान लोगे, तो स्वयं देखोगे कि तुम क्या कुछ कर गुज़रने में सामर्थ्यवान हो!

तुम जो आज अपने लिए असमर्थता महसूस कर रहे हो कि मैं क्या करूं, कैसे करूं? अपने लिए तनावग्रसित रहते हो, नींद नहीं आती, तो केवल सत्यपथ पर बढ़ जाओ, तुम्हारा आत्मबल इतना बढ़ जायेगा कि तुम दर्ज़नों लोगों के घरों की समस्याओं का सामना करने में सफल हो जाओगे। चूंकि मैं यही चाहता हूँ कि लोग मुझे जान सकें या न जान सकें, मगर मेरे शिष्यों को ज़रूर जानें, मेरे शिष्यों की पहचान हो। मैं समाज के बीच बहुत कम समय दे सकूंगा, आने वाले समय में जब मैं यज्ञों के क्रम की ओर बढ़ जाऊंगा, तो समाज को समय दे भी पाऊंगा या नहीं, यह भी निश्चित नहीं है। मगर मेरी ऊर्जा की तरंगें इस तरह कार्य करेंगी कि आपके अंदर कभी भी सामर्थ्य की कमी नहीं आयेगी। जिन संस्कारों की नीव मैं डाल रहा हूँ, उन संस्कारों की नीव को कोई नष्ट नहीं कर पायेगा।

एक माता के गर्भ से पुत्र या पुत्री, जो भी जन्म लेता है, उसके शरीर में माता-पिता की छाप आ जाती है। वह जैसे चलता है, बच्चे भी लगभग वैसे ही चलते हैं। किसी के घर-पड़ोस में जाओगे और कोई बच्चा खेल रहा है तथा तुम यदि उसके माता-पिता को जानते होगे, तो उसका चेहरा देखकर अंदाजा लगा लोगे कि यह उसी का बेटा या बेटी होगी। जब आपके शरीर का बाह्य स्वरूप आपके बेटे-बेटियों में नज़र आने लगता है, तो आप समझ लो कि आपकी आंतरिक चेतना भी उनके शरीर में समाहित होगी। यदि तुम अपने पुत्रों-पुत्रियों से प्रेम करते हो, तो आपको स्वतः सोचना है कि तुम्हारा जीवन कितना सादगीपूर्ण होना चाहिए। तुम नशे-मांसाहार से मुक्त हो, चरित्रवान् हो, चेतनावान् हो, तभी तुम्हारे परिवार में, घर में नारियों के गर्भ से चेतनावान् बच्चों का, चेतनावान् बच्चियों का जन्म होगा और वे संस्कारवान बनेंगे। यदि बच्चों से प्रेम करते हो, तो स्वतः पहले अपने आपको संवारो। शराबी बन करके, भ्रष्टाचारी बन करके, कुसंस्कारी बन करके, अनैतिक कार्य करके यदि तुम चाहो कि हम धन से बच्चों का कल्याण करेंगे, तो धन से कल्याण कभी नहीं हो सकता। आज बड़े-बड़े महलों को देखो, जहाँ राजा-महाराजा रहा करते थे, जहाँ ग़रीबों को पैर रखने की भी अनुमति नहीं रहा करती थी, वे महलों के सामने से भी निकलते थे, तो अपने

सबसे बड़ा वैभव आपके आत्मबल का वैभव है। ऐसे संस्कार अर्जित करो कि चाहे शरीर भले नष्ट हो, मगर तुम्हारे अंदर का आत्मबल जाग्रत् हो कि मैंने जो कुछ किया, अच्छा किया। मैंने कोई ऐसे कर्म नहीं किए कि मेरे वर्तमान संस्कार नष्ट हों और मैं जो पूर्व की चेतना लेकर आया था, उससे अपनी चेतना को मैंने और बढ़ाया है तथा मेरा नवीन जन्म चाहे जहाँ पर होगा, मैं इससे ज़्यादा ऊर्जा लेकर जन्म लूंगा। आपका गुरु भी वैसा ही जीवन जीता है।

-परमहंस योगीराज श्री शक्तिपुत्र जी महाराज

जूते-चप्पल अपने हाथ में लेकर निकलते थे, आज वहाँ सैनिकों के बूटों की टापें गूंजती हैं, उल्लू और चमगादड़ वहाँ पर उल्टे टंगे हुए नज़र आते हैं। कहाँ चला गया वह वैभव?

सबसे बड़ा वैभव आपके आत्मबल का वैभव है। ऐसे संस्कार अर्जित करो कि चाहे शरीर भले नष्ट हो, मगर तुम्हारे अंदर का आत्मबल जाग्रत् हो कि मैंने जो कुछ किया, अच्छा किया। मैंने कोई ऐसे कर्म नहीं किए कि मेरे वर्तमान संस्कार नष्ट हों और मैं जो पूर्व की चेतना लेकर आया था, उससे अपनी चेतना को मैंने और बढ़ाया है तथा मेरा नवीन जन्म चाहे जहाँ पर होगा, मैं इससे ज़्यादा ऊर्जा लेकर जन्म लूंगा। आपका गुरु भी वैसा ही जीवन जीता है। मेरा जन्म चाहे रेगिस्तान में होजाये, चाहे ग़रीब से ग़रीब परिवार में होजाये, मेरी ऊर्जा उसी तरह कार्य करती रहेगी।

अपनी यात्रा में मैंने हर क़दम पर प्रमाण दिये हैं कि जब मैंने समाज के बीच आठ महाशक्तियज्ञ सम्पन्न किए थे, तब पहले ही यज्ञ में मैंने कहा था कि यदि मेरे किसी एक महाशक्तियज्ञ में बरसात न हो, तो यह मान लेना कि मेरे पास पात्रता नहीं है। मेरे आठों यज्ञों में बरसात हुई और उन आठ यज्ञों के माध्यम से असाध्य से असाध्य रोगियों को ठीक किया गया। लोग कहते हैं कि मूर्तियों में, प्रतिमाओं में जान नहीं होती! जब मेरा सातवाँ यज्ञ चल रहा था, तो कमलेश गुप्ता वगैरह यहाँ बैठे हुए हैं और तीन शिष्य जो मेरे बहुत नज़दीक थे, वे बार-बार आग्रह कर रहे थे कि गुरुजी हमको कैसे अहसास हो कि हम महसूस कर सके कि 'माँ' की प्रतिमा में चैतन्यता होती है? तब मैंने कहा कि हो सकता है कि तुम मेरे हृदय में बैठी हुई 'माँ' को देख सको या न देख सको, मगर 'माँ' के हृदय में मेरी उपस्थिति है, यह मैं इस यज्ञ में तुम्हें ज़रूर दिखाऊंगा और जब सातवाँ यज्ञ चल रहा था, तो मैंने उन शिष्यों से कहा कि सिर्फ़ मेरे पीछे बैठ जाना, मुझसे बीस-पच्चीस फीट दूर बैठ जाना और जब आधे-एक घण्टे में यज्ञ की ऊर्जा प्रारम्भ होजाये, मेरा यज्ञ पूरे प्रवाह पर हो, तो केवल 'माँ' की छवि की ओर देखना। यदि 'माँ' की छवि के हृदय में मेरी छवि तुम्हें नज़र न आये, तो यह मान लेना कि मेरे पास कोई पात्रता नहीं है। आज वे शिष्य यहाँ बैठे हैं, उनसे मीडिया मिल सकता है, कोई भी मिल सकता है। यज्ञों के आयोजक यहाँ बैठे हैं, प्रदीप कलेसर बैठे हैं, रणधीर सिंह बैठे हैं, इन्द्रपाल आहूजा बैठे हैं, अनेक भक्त यहाँ बैठे हैं, जिन्होंने प्रारम्भ में यज्ञों की व्यवस्थाएं दीं।

आज तो लाख-लाखकुण्डीय यज्ञ किए जा रहे हैं, मगर फल शून्य रहता है। मेरा एककुण्डीय यज्ञ होता है, ग्यारह दिन चलता है, स्वयं के अलावा किसी अन्य को बिठाकर यज्ञ नहीं कराया जाता और ग्यारह दिनों में मात्र 32 किलो सामग्री का उपयोग करता हूँ। आज तो बड़े-

बड़े यज्ञ होते हैं, इतने क्विंटल सामग्री ले आओ, घी ले आओ, स्वाहा, स्वाहा कहते रहेंगे और पण्डित का ध्यान दूसरी तरफ है कि कैमरा मुझे देख रहा है कि नहीं देख रहा है, मेरी फोटो आ रही है कि नहीं आ रही है! किसी कुण्ड में अग्नि जल रही है, तो किसी में नहीं जल रही है, बस किराये के पण्डित बुला लिए जाते हैं और यज्ञ पूर्ण होगया! यही तो बरबादी का रास्ता है कि यज्ञ जैसे पवित्र क्रमों में आज ढोंग और पाखण्ड शामिल होगया है! बड़े-बड़े पण्डालों में आज आग क्यों लग रही हैं? जब कर्ता-क्रिया-कर्म एकसमान नहीं होंगे, तो अच्छे परिणाम की बजाए उसके दुष्परिणाम मिलने शुरु होजाते हैं।

मेरे एक यज्ञ में 32 किलो की सामग्री होती है, ग्यारह दिनों का यज्ञ होता है और यदि एक बार आसन जमाकर बैठ जाता हूँ, तो फिर न एक शब्द बोलने की ज़रूरत पड़ती है, न कोई सामग्री मंगाने की ज़रूरत पड़ती है, बस एकाग्रता के साथ ध्यानस्थ होकर एक क्रम से आहूति चलती रहती है। मैंने कहा था कि जब मेरा प्रारम्भिक यज्ञ होगा, तो मेरी यज्ञस्थली के समक्ष जितने नज़दीक मैं बैठता हूँ, उससे दो-तीन फीट की दूरी पर भी यदि कोई बैठ जायेगा और दो घण्टे भी यदि बैठकर दिखा देगा, तो अपना सिर काटकर उसके चरणों में चढ़ा दूंगा। कई लोगों ने प्रयास किया, आधे घण्टे भी नहीं बैठ पाये। इस प्रकार के आठ महाशक्तियज्ञ समाज के बीच हुए हैं।

सौ महाशक्तियज्ञ अभी शेष हैं, उन यज्ञों के क्रमों

परम पूज्य सद्गुरुदेव जी महाराज के चिन्तन को श्रवण करते हुए भक्तगण

को प्रारम्भ तो होने दो, फिर देखोगे कि समाज में किस तरह परिवर्तन आता चला जायेगा? चूंकि मैं 'माँ' की भक्ति को जानता हूँ और 'माँ' की भक्ति के सामने कुछ भी असम्भव नहीं है, सबकुछ सम्भव है। उस यज्ञस्थल की तपोभूमि का फल यह होता है कि यदि उस भूमि पर बैठने का सौभाग्य प्राप्त होजाये, तो हमारी असाध्य से असाध्य बीमारियाँ ठीक होजाती हैं। वे कार्य मैंने समाज के बीच करके दिखाए हैं। जिन्हें डॉक्टरों ने कह दिया था कि अब ये जीवित बचेंगे ही नहीं, इन्हें घर ले जाओ और जितने दिन हैं, सेवा कर लो। जिनके बगल में कोई बैठना पसंद नहीं करता था, जिनकी लार बहती थी, जिनसे दुर्गन्ध आती थी, उनको अपने यज्ञस्थल से बीस-पच्चीस फीट दूर बिठाकर मैंने डॉक्टरों को चुनौती देकर कहा था कि आओ परीक्षण कर लो और या तो तुम इन्हें ठीक कर दो या मैं बिना किसी दवा के केवल यज्ञभूमि में ग्यारह दिनों के यज्ञ में उन्हें बैठने की अनुमति दूंगा और ग्यारह दिनों के अंदर स्वस्थ करके भेजूंगा। ग्यारह दिनों के अंदर उन्हें पूर्ण स्वस्थ किया गया और जो मरीज अपने आप उठ नहीं पाते थे, दो-दो लोग पकड़ करके जिन्हें उठाते थे, वे ग्यारह दिनों के बाद यज्ञ की विसर्जन यात्रा में पैदल चलकर गए। जो स्वतः अपने हाथ से पानी नहीं पी पाते थे, वे यात्रा में दूसरों को पानी पिलाते हुए गए।

ऐसे प्रमाण एक नहीं, अनेक हैं और सभी प्रमाण समाज के बीच के हैं। ये कोई हिमालय, कन्दराओं के प्रमाण नहीं दे रहा हूँ। यदि कोई किसी एक भी प्रमाण को ग़लत साबित कर देगा, जो मेरे द्वारा समाज के बीच किए गए हैं, तो उससे बड़ा कार्य करके दिखा दूंगा। पहले कोई भी कहता था कि दूसरे किसी स्थान पर कोई व्यक्ति कहाँ पर है? उसके बारे में जानकारी देना हो, तो एक क्षण में बता देता था, मगर उसके बाद मैंने संकल्प लिया कि मेरी ऊर्जा केवल जनकल्याण के लिए होगी और जब कभी धर्मरक्षा के लिए ज़रूरत होगी, तो मैं आज भी कहता हूँ कि उन चुनौतियों के सामने खड़ा होने के लिए तैयार हूँ।

यदि जगह-जगह कोई कहने लगे कि यहाँ पानी बंद करा दो, यह चमत्कार कर दो, तो मैं प्रकृति की किसी व्यवस्था में अवरोध पैदा करने नहीं आया। हाँ, जहाँ मेरा धर्म बाधित हो रहा होगा, जनकल्याण के लिए कोई कार्य होगा, जहाँ मेरे लिए यह आवश्यक होगा कि जब विचारधारा नष्ट हो रही है, उस विचारधारा की रक्षा करना है, धर्म की रक्षा करना है, तो वहाँ पर पाँचों तत्त्व मेरी मुट्ठी में हैं। जिनके प्रमाण मैंने अनेक बार दिए हैं और ज़रूरत पड़ने पर आज भी देने के लिए तत्पर हूँ कि जब चाहें, जहाँ चाहें, भीषण से भीषण बरसात को एक मिनट में रोक दूंगा और जहाँ कहेंगे कि यहाँ बरसात नहीं हो सकती, मात्र अपने यज्ञों के माध्यम से वहाँ बरसात कराने की सामर्थ्य रखता हूँ। सबकुछ सम्भव है।

आप चमत्कार देखना चाहते हैं, तो मेरे चमत्कार हरपल जनकल्याण के लिए हो रहे हैं। यह चमत्कार ही तो है कि मानवता दोनों हाथ उठा-उठाकर पुकार रही है कि हम धर्म, राष्ट्र और मानवता के लिए अपना जीवन समर्पित करने के लिए तैयार हैं। यह चमत्कार ही तो है कि एक ग़रीब से ग़रीब व्यक्ति जो स्वयं नशे-मांसाहार से ग्रसित था, आज दूसरों को नशे-मांसाहार से मुक्त करा रहा है। छोटे-छोटे बच्चे 'माँ' के जयकारे लगा रहे हैं। यदि यह चमत्कार नज़र नहीं आ रहा, इनके गले में पड़े हुए रक्षाकवच नज़र नहीं आ रहे, इनके हाथों में दण्डध्वज नज़र नहीं आ रहे, तो फिर तुम्हें कोई चमत्कार नज़र नहीं आयेगा।

आज घरों में 'माँ' के ध्वज लहरा रहे हैं, लोगों के चेहरों पर खुशियाँ हैं, चैतन्यता है, परोपकार की भावना है। चमत्कार तो मेरे लिए बहुत तुच्छ सी बात है। कितने लोग तो जीवनदान प्राप्त कर चुके हैं और यदि लिस्ट

बनाने बैठ जाऊंगा, तो कई दिन गुज़र जायेंगे। इस यात्रा में कितने लोग अनेक समस्याओं से मुक्ति पाकर लाभान्वित हो चुके हैं, यह तुम्हारी कल्पना से भी परे होगा, मगर मैंने कहा है कि मैं अपने आपको महिमामण्डित कराने के लिए आया ही नहीं हूँ। मेरे पास समय ही नहीं है और आपका मान-सम्मान मेरे लिए विष के समान नज़र आता है। मैं जितने संसाधनों का उपयोग करता हूँ, ऊँचे मंच पर बैठता हूँ, जिस वाहन में चलता हूँ, यह सब किसी के दान के पैसे से उपयोग नहीं करता हूँ। मैं अपने जीवकोपार्जन के लिए, अपने बच्चों के जीवकोपार्जन के लिए स्वयं के कर्म से उपार्जित कुछ मेरे पहले से क्रम हैं, जिससे इतना धन आ जाता है कि उससे मेरे और मेरे परिवार का जीवकोपार्जन होजाता है और जनकल्याण के लिए भी कुछ सहयोग करने में सफल होजाता हूँ। वही यात्रा आपसे भी तय करने के लिए कहता हूँ। आओ, हम सब लोग अपने कर्म पर विश्वास करें, अनीति-अन्याय-अधर्म का त्याग कर दें और सत्यधर्म की शक्ति को समझने का प्रयास करें।

एक बार 'माँ' का आंचल तो पकड़ लो, 'माँ' के चरणों के पास बैठना तो प्रारम्भ कर दो, अपने अंतःकरण को निर्मल और पवित्र बनाना तो प्रारम्भ कर दो, सबकुछ बदलता चला जायेगा। याद रखो कि हम बदलेंगे-जग बदलेगा, हम सुधरेंगे-जग सुधरेगा। हरपल अपने आपका आकलन करते रहो कि मुझमें और क्या कमियाँ हैं एवं मैं अपनी कमियों को और कैसे दूर कर सकता हूँ? जब कर्म की प्रधानता है, तो क्यों न मैं ऐसे कर्म करूं, जिससे मुझे अच्छे संस्कारों की प्राप्ति हो, मेरा आत्मबल बढ़े, मेरी ऊर्जाशक्ति बढ़े, मेरे अंश से जन्म लेने वाले बच्चों में ऊर्जाशक्ति हो। उस दिशा में कार्य करो कि तुम और तुम्हारी आने वाली संतानें भी चेतनावान् बनें, गुणवान बनें, धर्मवान बनें, कर्मवान बनें।

धन-वैभव सब नाशवान चीज़ें हैं। मैं यह नहीं कह रहा कि उसके प्रति कोई सोच ही मत रखो। आपके संस्कारों से जितना आ रहा है, वह आवश्यक है और नौकरी कर रहे हैं, व्यवसाय कर रहे हैं, तो वे कार्य भी करिये। जो आ रहा है, उससे संतुष्ट रहिए, मगर व्याकुल मत हो जाइये। मैं आगे बढ़ते हुए क़दम रोकने को नहीं कहता, मगर आप तो उस अंधी दौड़ में दौड़ रहे हो और जायज़-नाजायज़ सब रास्ते तय करते चले जा रहे हो, जो ग़लत है, उसको भी समर्थन दे रहे हो, उसको आर्थिक सहयोग भी दे रहे हो और वह आपके आर्थिक सहयोग का भी दुरुपयोग कर रहा है। यदि तुम्हारे सहयोग से कुछ भी अहित-अनर्थ हो रहा है, तो उस पाप के बराबर के भागीदार तुम भी हो। अतः अच्छे कर्म करो और अच्छे विचार अपनाओ।

इस शिविर व्यवस्था में जहाँ भी, जिसने आंशिक भी सहयोग किया है, मैं उन सभी को अपने हृदय में धारण करता हुआ अपना पूर्ण आशीर्वाद प्रदान करता हूँ। आरती का समय होने जा रहा है, आरती की ओर बढ़ेंगे, मन को एकाग्र करके उस दिव्य आरती का लाभ लेंगे। आओ, इस यात्रा को खुले मनमस्तिष्क से देखो, समझो और फिर तुम्हारी अंतर्रात्मा चीख-चीख करके कहे कि इसी यात्रा से हमारा कल्याण होना है, तो मैं दोनों हाथ फैलाकर आपका स्वागत करता हूँ कि आओ, मैं आपके अस्तित्व को जगाने के लिए अपने अस्तित्व को मिटा दूंगा। 'माँ' के चरणों में आओ, धर्म, राष्ट्र, मानवता के लिए कार्य करो। इन्हीं भावनाओं के साथ आप लोग आज की दिव्य आरती का लाभ लो। मैं एक बार पुनः आप सभी लोगों को अपना पूर्ण आशीर्वाद प्रदान करता हूँ। **बोलो जगदम्बे मात की जय!**

संकलनः **पूजा शुक्ला**

यूट्यूब चैनल 'बीएमकेएस' के माध्यम से ऋषिवर
सद्गुरुदेव परमहंस योगीराज श्री शक्तिपुत्र जी महाराज के द्वारा
नूतनवर्ष 2024 पर अपने चेतनाअंशों, शिष्यों–भक्तों,
समस्त देशवासियों और विश्व जनमानस को आशीर्वचन

नया वर्ष भारत को ऊँचाइयों की ओर ले जायेगा और बढ़ते क्रम में प्रवाहित होगी अध्यात्मिक ऊर्जा

धर्मसम्राट् युग चेतना पुरुष सद्गुरुदेव परमहंस योगीराज श्री शक्तिपुत्र जी महाराज ने नूतन वर्ष 2024 के प्रथम दिवस; दिनांक 01 जनवरी को अपने चेतनाअंशों, शिष्यों–भक्तों, देशवासियों और विश्वजनमानस को आशीर्वाद प्रदान करते हुए चिन्तन दिया कि ''हमारे सनातनधर्म में चैत्र नवरात्र प्रतिपदा से नए वर्ष का प्रारम्भ होता है, लेकिन जब किसी चीज को सम्पूर्ण समाज आत्मसात कर लेता है, जैसे कि अंग्रेज़ी वर्ष के कैलेण्डर के अनुसार प्रारम्भ दिनांक 01 जनवरी को नववर्ष के रूप में मनाया जाना, तो इसे भी मानना न्यायोचित माना जाना चहिए। इसलिए हम इसे भी मनाते हैं। चाहे कोई भी क्रम प्रारम्भ हो, उसे अध्यात्मिकस्वरूप देकर धार्मिक वातावरण में शुरू करना चाहिए, लेकिन देखा जाता है कि पश्चिमीसभ्यता में रंगे लोग इस नए वर्ष के प्रारम्भ दिवस को प्रायः फिल्मी धुनों, नाच–गाने, शराब व ड्रग्स के नशे और फूहड़पन में व्यतीत करते हैं, जो कतई ठीक नहीं है।

भगवती मानव कल्याण संगठन के कार्यकर्ता आज के दिन को अध्यात्मिकस्वरूप देते हुए 24 घंटे या 05 घंटे के श्री दुर्गाचालीसा अखण्ड पाठ और माता भगवती आदिशक्ति जगत् जननी जगदम्बा की दिव्य आरती करके मनाते हैं। देशभर में हज़ारों–हज़ार स्थानों पर समाज के बीच यह क्रम समारोहपूर्वक सम्पन्न किए जाते हैं, जिससे 'माँ' की कृपा प्राप्त करके मानवसमाज विकारों से मुक्त होकर सुख–शांति–समृद्धि के पथ पर आगे बढ़ता रहे। आगे चलकर चैत्र प्रतिपदा के दिन को नूतन वर्ष के रूप

नववर्ष पर चिन्तन प्रदान करते हुए धर्मसम्राट् युग चेतना पुरुष सद्गुरुदेव परमहंस योगीराज श्री शक्तिपुत्र जी महाराज

में मनाने हेतु व्यापक स्वरूप दिया जायेगा।

मेरी शुभकामना है, मेरा आशीर्वाद है कि यह नया वर्ष भारत को उन्नति की ओर, ऊँचाइयों की ओर ले जायेगा और अध्यात्मिकऊर्जा बढ़तेक्रम में प्रवाहित होगी। आप लोगों ने युगपरिवर्तन का शंखनाद किया है, महाशक्ति शंखनाद किया है, फलस्वरूप परिवर्तन आप देख ही रहे हैं। यह शक्ति का युग है, 'माँ' का युग है। देवताओं पर भी जब संकट आता है, तो माता आदिशक्ति जगत् जननी जगदम्बा की कृपा से वह संकट दूर होता चला जाता है। भगवान् श्रीराम की जन्मभूमि अयोध्या में भव्य राममंदिर का बनना विश्व की मानवता की सफलता है और 'माँ' की कृपा से उस मंदिर का लोकार्पण समारोह दिनांक 22 जनवरी 2024 को होने जा रहा है। उस दिन सभी लोग कम से कम 05 घंटे का श्री दुर्गाचालीसा पाठ अवश्य करें। इतना ही नहीं, रामचरितमानस का पाठ करके मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम के जीवनचरित को अपने जीवन में उतारें। केवल 'जय श्रीराम' कह देने से काम नहीं चलेगा, बल्कि उनके पदचिन्हों पर चलना पड़ेगा।

दिनांक 22 जनवरी को अयोध्या में नवनिर्मित राममंदिर में रामलला की स्थापना और मंदिर का लोकार्पण समारोह है, तो दिनांक 23 जनवरी को इस पंचज्योति शक्तितीर्थ सिद्धाश्रम धाम का स्थापना दिवस है। ये दो दिन आपको अध्यात्मिकक्रम के लिए मिल रहे हैं, जो कि आपके सौभाग्य को बढ़ाने वाले हैं।

नशामुक्ति से ही साकार होगी रामराज्य की कल्पना

राममंदिर के निर्माण का श्रेय, इस बात का लाभ यदि भाजपा लेना चाहती है, तो लेना ही चाहिए, क्योंकि भाजपा ने सनातनधर्म के लिए कुछ कार्य किया है। मोदी और योगी के द्वारा सनातनधर्म के लिए जो कार्य किया जा रहा है, उसके लिए वे बधाई के पात्र हैं, परन्तु...। कहते हैं कि राम आएंगे, हमारे सनातनधर्म का परचम फहरायेगा, अध्यात्मिकऊर्जा से हमारा देश प्लावित होगा, तो ठीक बात है, लेकिन यह तभी होगा, जब पूरा देश नशामुक्त घोषित होजायेगा और जब तक देश नशामुक्त नहीं होगा, तब तक यह सम्भव नहीं है, क्योंकि नशे के चलते अपराध बढ़तेक्रम में हैं, फिर रामराज्य की कल्पना कैसे साकार हो सकती है? सभी क्षेत्रों में हम विकास के पथ पर बढ़ रहे हैं, लेकिन समाज किस दिशा में जा रहा है, इस पर किसी का ध्यान नहीं है! हमें समाज को भी देखना पड़ेगा तथा हमें नशे-मांसाहार से मुक्त, चरित्रवान् और चेतनावान् समाज का निर्माण करना होगा। इस विचारधारा पर काम करने की ज़रूरत है, अपने अन्दर दया, ममता, प्रेम, करुणा स्थापित करने की ज़रूरत है, तभी अध्यात्मिकऊर्जा का प्रवाह फैलेगा।

बिलासपुर शिविर के लिए आवाहन

भगवती मानव कल्याण संगठन के द्वारा दिनांक 10-11 फ़रवरी 2024 को बिलासपुर, छत्तीसगढ़ में शक्ति चेतना जनजागरण शिविर का आयोजन किया गया है और उस शिविर के लिए मैं आवाहन करूँगा कि अधिक से अधिक लोग शिविर का लाभ लें। एक-एक शिविर महत्त्वपूर्ण होता है, जिसमें माता भगवती आदिशक्ति जगत् जननी जगदम्बा की दिव्य आरती की जाती है और उस दिव्य आरती को प्राप्त कर लेने से जीवन में बहुत कुछ परिवर्तन आता चला जाता है। मैं चाहूँगा कि देश के कोने-कोने से जो भी नशा करते हों, यदि उनका नशा छुड़वाना चाहते हैं, तो बिलासपुर में आयोजित शिविर में आप उन्हें लेकर उपस्थित हो सकते हैं। निश्चित रूप से दो दिन के इस शिविर में यदि सम्मिलित होंगे, तो वहाँ से नशामुक्त होकर जायेंगे।

अपने अन्दर अध्यात्मिक शक्ति को जगाएं

नित्यप्रति अपने समय का सदुपयोग करें, क्योंकि जो समय निकल जाता है, वह पुनः प्राप्त नहीं होता। अपने अन्दर अध्यात्मिकशक्ति को जगाने का प्रयास करें। बाह्य भौतिकजगत् की सम्पत्ति को एकत्रित करने की अपेक्षा अध्यात्मिकजगत् की सम्पत्ति एकत्रित करने की ललक आपके अन्दर होनी चाहिए और हम अपने अन्दर की इस सम्पत्ति को अपने कर्म के बल पर, अपने पुरुषार्थ के बल पर उजागर करके स्वयं के साथ समाज का कल्याण कर सकते हैं, केवल इच्छाशक्ति दृढ़ होनी चाहिए। आज समाज इस सत्य को स्वीकार करे या न करे, एक-न-एक दिन स्वीकार करना पड़ेगा कि वर्तमानकाल का यह समय शक्ति का है, माता आदिशक्ति जगत् जननी जगदम्बा का है और उनकी कृपा से समाज में बहुतकुछ परिवर्तन हो रहा है।

धर्मगुरु समाजहित में लगाएं अपनी सामर्थ्य

समाज के जो धर्मगुरु हैं, उनका नए वर्ष में आवाहन करता हूँ कि कम से कम इस नए वर्ष में अपनी सामर्थ्य को मानवता के कल्याण की दिशा में लगाने का प्रयास करें। आज यदि ये धर्मगुरु सच्चाई, ईमानदारी के साथ समाज के बीच, समाजहित में कार्य करना प्रारम्भ कर दें, तो समाज में बहुत कुछ बदलाव आ सकता है। जिसके पास जो सामर्थ्य है, उसे समाजकल्याण में लगाएं, लेकिन

इस बात का ध्यान रखें कि समाज में उग्रता न बढ़ने पाए। सनातनधर्म को मानने वालों को उग्र नहीं होना चाहिए। चेतनावान् और उग्रता में बहुत बड़ा अन्तर होता है। चेतनावान् अध्यात्मिकऊर्जा से परिपूर्ण होता है और वह सोच-विचार करके कार्य करता है तथा अनीति-अन्याय-अधर्म के कार्य नहीं करता। जबकि, उग्र व्यक्ति सोचता-समझता नहीं, क्योंकि वह अध्यात्मिक परिवेश में रहा ही नहीं। हमें हर पल प्रयास करना है कि समाज चेतनावान् बने और अपने परिवार को सुख-समृद्धि देने के साथ ही तड़पती, कराहती हुई मानवता को सामर्थ्य प्राप्त हो, इसके लिए एक सशक्त माध्यम बन सकें।

सामान्य बात नहीं है 'माँ' का अखण्ड गुणगान

इस पंचज्योति शक्तितीर्थ सिद्धाश्रम धाम में 'माँ' का अखण्ड गुणगान चल रहा है और यह कोई सामान्य बात नहीं है। इससे विश्व की मानवता लाभ उठा रही है। अयोध्या में सैकड़ों वर्ष के अथक प्रयास के बाद 22 जनवरी को रामलला की स्थापना और उनके भव्य मंदिर का लोकार्पण समारोह भी कोई सामान्य बात नहीं है, इससे हमारा सनातनधर्म हमेशा जीवंत रहेगा। यदि यह पावन पुनीत कार्य चैत्र नवरात्र पर रखा गया होता, तो और अच्छा होता, फिर भी एक अच्छे कार्य के लिए जो भी तिथि निश्चित की गई है, ठीक है। 22 जनवरी को हर व्यक्ति प्रभु श्रीराम के नाम की एक ज्योति अवश्य जलाए, जिससे विश्वजनमानस को प्रभु श्रीराम की कृपा प्राप्त हो सके।''

यूट्यूब चैनल 'बीएमकेएस' के माध्यम से ऋषिवर सद्गुरुदेव परमहंस योगीराज श्री शक्तिपुत्र जी महाराज ने मकर संक्रान्ति पर्व पर अपने चेतनाअंशों, शिष्यों-भक्तों, समस्त देशवासियों और विश्व जनमानस को आशीर्वाद प्रदान करने के साथ दिया विशेष चिन्तन

आदिशक्ति जगत् जननी जगदम्बा की कृपा से अयोध्या में होने जा रही है भगवान् श्रीराम की प्राण-प्रतिष्ठा

धर्मसम्राट् युग चेतना पुरुष सद्गुरुदेव परमहंस योगीराज श्री शक्तिपुत्र जी महाराज के द्वारा अयोध्या में मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम की प्राण-प्रतिष्ठा से पूर्व; मकर संक्रान्ति पर्व पर, दिनांक 15 जनवरी 2024 को अपने चेतनाअंशों, शिष्यों-भक्तों, देशवासियों और विश्वजनमानस को आशीर्वाद प्रदान करते हुए चिन्तन प्रदान किया गया -

''सनातनधर्म को लेकर अयोध्या में भगवान् श्रीराम की प्राण-प्रतिष्ठा के संदर्भ में जो द्वंद्व छिड़ा हुआ है, उस पर कुछ विचार व्यक्त करने के लिए सनातन समाज के सामने उपस्थित हुआ हूँ। सनातनधर्म ने सदैव संघर्ष का रास्ता तय किया है और मैंने अपना पूरा जीवन सनातनधर्म के उत्थान तथा मानवता के कल्याण हेतु समर्पित किया है। आज का दिवस मकर संक्रान्ति के योगों से युक्त अतिपावन है। भगवती मानव कल्याण संगठन के कार्यकर्ता देश के कोने-कोने में जनजागरण में व्यस्त रहते हैं, तो आज भी उनका यह क्रम ज़ारी रहेगा।

अयोध्या धाम के सम्बंध में जो द्वंद्व उपस्थित किया गया है, उस पर सत्य के विचारों को प्रकट करना आवश्यक है। सनातनधर्म को पूर्णरूपेण स्थापित करने के लिए, मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम की जन्मभूमि पर मंदिर बनाने के लिए, श्रीराम की प्राण-प्रतिष्ठा के लिए पाँच सौ वर्ष से अधिक समय तक संघर्ष करना पड़ा, तब जाकर आज यह पावन दिन देखने को मिल रहा है और प्राण-प्रतिष्ठा की जो तिथि निश्चित की गई है, उसका सबको स्वागत करना चाहिए।

प्राण-प्रतिष्ठा के लिए प्रधानमंत्री मोदी जी पूरी तरह उचित हैं

शंकराचार्यों के द्वारा इस पर जो विचार रखे गए, क्या वह उचित हैं? उनके द्वारा कहा गया कि नरेन्द्र मोदी के द्वारा प्राण-प्रतिष्ठा किया जाना उचित नहीं है। मैं कहूंगा कि प्राण-प्रतिष्ठा के लिए प्रधानमंत्री मोदी जी पूरी तरह उचित हैं। वे सनातनधर्मी हैं, ब्रह्मचारी हैं, साधक हैं और सनातनधर्म के साथ ही देश के लिए भी बहुत कुछ कर रहे हैं। ऐसे विराट व्यक्तित्त्व के धनी व्यक्ति के लिए यदि जाति के आधार पर कोई बात की जाए, तो वहाँ पर बोलना उचित होजाता है। श्रीराम को हम प्राणस्वरूप

मानते हैं और आक्रमणकारियों ने उनके जन्मस्थान पर बने मंदिर को ध्वस्त किया, उसका स्वरूप बदला गया, लेकिन वे अवशेष समाप्त नहीं कर पाए। वहाँ पर राममंदिर का निर्माण होने के साथ ही प्राण-प्रतिष्ठा हो रही है।

माता भगवती आदिशक्ति जगत् जननी जगदम्बा की कृपा से अयोध्या में भगवान् श्रीराम की प्राण-प्रतिष्ठा होने जा रही है। मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम, जो कण-कण में व्याप्त हैं, भला उनकी कृपा के बिना कोई क्रम हो सकता है? जहाँ पर बजरंगबली की कृपा हो कि वहाँ पर कभी भूत-पिशाचों की बाधा नहीं होगी, वहाँ के लिए कहा जा रहा है कि भूत-पिशाचों का वास हो जायेगा! मैं सभी धर्मगुरुओं से कहना चाहता हूँ कि जिस कार्य के लिए विश्व के जनमानस में उत्सुकता व्याप्त है, जिनकी श्रद्धा श्रीराम की प्राण-प्रतिष्ठा से जुड़ी हुई है, तो आप लोग कैसे त्रिकालदर्शी हो? कहते हैं कि मंदिर का पूर्ण निर्माण नहीं हुआ है। अरे, गर्भगृह की स्थापना हो चुकी है और जितना निर्माणकार्य हो चुका है, प्राण-प्रतिष्ठा के लिए पर्याप्त है। यदि आत्मज्ञानी नहीं बनोगे, तो जीवनभर भटकते रहोगे।

चिन्तन प्रदान करते हुए परम पूज्य गुरुवरश्री

अनीति-अन्याय-अधर्म के विरुद्ध उठती रहेगी मेरी आवाज़

हमारे शंकराचार्य योगी हैं, ज्ञानी हैं और उनके द्वारा विरोध किया जाए, तो मेरा मानना है कि उन्हें इस सत्य को स्वीकार करना चाहिए कि योगी आदित्यनाथ ने, उत्तरप्रदेश की सरकार ने सनातन के लिए अपना सर्वस्व समर्पण किया है, अतः उन पर प्रश्नचिन्ह लगाना बन्द करें। मेरी आवाज़ हमेशा अनीति-अन्याय-अधर्म के लिए उठती रहेगी। मैं कौन हूँ? यह पहचानने की ज़रूरत है। मैं योगीराज हूँ, मैं सच्चिदानंद का अवतार हूँ। अयोध्या का जो विकास हो रहा है, वह सराहनीय है। इसके लिए समाज नरेन्द्र मोदी और योगी आदित्यनाथ का हमेशा ऋणी रहेगा। ये दोनों आत्माएं कोई सामान्य आत्माएं नहीं हैं, बल्कि परमधाम की चैतन्य आत्माएं हैं, ऋषिआत्माएं हैं। जाति के आधार पर प्रश्न उठाना, कैसे ज्ञानी हो? अरे, जन्म से तो सभी शूद्र होते हैं और यह आप लोग भी कहते रहते हो।

कैसी विचारधारा का जीवन जी रहे हैं शंकराचार्य?

आज श्रीराम की कृपा से, माता भगवती आदिशक्ति जगत् जननी जगदम्बा की कृपा से यह पावन दिन देखने को मिल रहा है। हमारे सम्मानित शंकराचार्यों का यह कहना कि जब हमारा समय आयेगा, तब देखेंगे! कैसी विचारधारा का जीवन जी रहे हो? सनातनधर्म के उत्थान के लिए आज से अधिक अच्छा समय और कब आयेगा? यह युगपरिवर्तन का समय है। सभी शंकराचार्य योग्य हैं, सक्षम हैं, बहुत कुछ कर सकते हैं, लेकिन कुछ कर नहीं पा रहे हैं। आख़िर क्यों?। मेरे द्वारा अनेक बार कहा जा चुका है कि सत्य के लिए, मानवता के लिए, सनातनधर्म की रक्षा के लिए आगे आइए और अनीति-अन्याय-

अधर्म के विरुद्ध सड़क पर उतरकर आवाज़ उठाइए।

मानवता के लिए आज तक क्या कार्य किया?

प्राण-प्रतिष्ठा के कार्यक्रम में उपस्थित नहीं होना चाहते! यदि चारों शंकराचार्य उपस्थित होते, तो हमारा सनातनधर्म गौरवान्वित होता। मैं पूछना चाहता हूँ कि आप लोगों ने आज तक क्या कार्य किया है? नशामुक्त समाजनिर्माण के लिए, मानवता के लिए, सत्यधर्म के उत्थान के लिए, गौ-संरक्षण के लिए क्या किया है? जिससे समाज एकजुट हो पाता। केवल सनातन-सनातन कहकर अपने मठ और मंदिरों तक ही सीमित रहे आए। यदि कोई भी साधु-संत-वैरागी सत्य की आवाज़ नहीं बोल सकता, तो इससे सिद्ध होता है कि उनमें कहीं-न-कहीं, कुछ-न-कुछ कमी है। साधु-सन्तों की हत्या हुई, साधु-सन्तों को पीटा जा रहा है, फिर भी ये शंकराचार्य चुप हैं! इस पर भी आज तक आवाज़ नहीं उठाई गई और सनातन की बात करते हैं। अच्छा होता कि चारों शंकराचार्य प्राण-प्रतिष्ठा के कार्यक्रम में पहुंचते और प्रधानमंत्री मोदी जी से कहते कि देश को ज़्यादा और कुछ नहीं दे सकते, तो कम से कम देश को पूर्ण नशामुक्त घोषित कर दो और नहीं तो उत्तरप्रदेश को ही नशामुक्त घोषित कर दो और यदि देश को नशामुक्त घोषित नहीं किया गया या उत्तरप्रदेश को नशामुक्त घोषित नहीं किया गया, तो हम सड़क पर उतरकर आन्दोलन करने के लिए बाध्य होंगे। उन्हें यह ध्यान रखना चाहिए कि 'आत्मा की अमरता और कर्म की प्रधानता' एक शाश्वत सत्य है।

क्या किसी शंकराचार्य का सूक्ष्मशरीर जाग्रत् है?

क्या किसी शंकराचार्य का सूक्ष्मशरीर जाग्रत् है? एक भी शंकराचार्य ने अपने सूक्ष्मशरीर को जाग्रत् नहीं किया है और न ही वे आत्मज्ञानी हैं। यदि अपने सूक्ष्मशरीर को जाग्रत् किया होता, आत्मज्ञानी होते, तो उनकी एक आवाज़ पर समाज एकजुट होजाता। विपरीत समय को अपने अनुकूल बना लेने वाला ही साधक होता है। शंकराचार्य एक बार मानवता के कल्याण के लिए सामने तो आएं। मेरा पूरा जीवन महाशक्तियज्ञ के लिए, सनातनधर्म के उत्थान के लिए समर्पित है और मेरे लाखों स्वयंसेवी कार्यकर्ता समाजकल्याण के कार्य में लगे हुए हैं। भगवती मानव कल्याण संगठन ने इतने कम समय में मानवता के कल्याण के लिए जितना कार्य किया है, वह किसी अन्य संगठन के वश की बात नहीं है। जब बाबरी मस्ज़िद का विध्वंश हुआ, तब भी मेरी वहाँ उपस्थिति थी और जब श्रीराम की प्राण-प्रतिष्ठा होगी, तब भी मैं वहाँ उपस्थित रहूंगा। शंकराचार्य बताएं कि क्या उनका सूक्ष्मशरीर जाग्रत् है?

प्राण-प्रतिष्ठा कार्यक्रम से सभी लोग जुड़ें

22 जनवरी को भगवान् श्रीराम के नाम की एक-एक ज्योति अवश्य जलाएं। धीरे-धीरे अयोध्या का और विकास होता चला जायेगा तथा एकदिन ऐसा आयेगा, जब श्रीराम मंदिर की दीवारें स्वर्णजड़ित हो जायेंगी। प्राण-प्रतिष्ठा कार्यक्रम से सभी लोग जुड़ें और अपने-अपने घरों में श्रीरामचरितमानस का पाठ करें तथा समय मिलने पर अयोध्या अवश्य जाएं। मैंने भी अपने लाखों शिष्यों के साथ इसी वर्ष दिसम्बर माह में अयोध्या जाने का निर्णय लिया है।

वर्तमान में मोदी और योगी सरकारें बहुत अच्छा कार्य कर रहीं हैं। मैं एक बार फिर कहता हूँ कि प्राण-प्रतिष्ठा के लिए नरेन्द्र मोदी जी पूरी तरह उपयुक्त हैं। समस्त मानवसमाज को मैं पुनः अपना पूर्ण आशीर्वाद प्रदान करता हूँ।''

22 जनवरी को राममय हुआ सिद्धाश्रम, गूँजे 'माँ'–गुरुवर के और प्रभु श्रीराम के जयकारे

दिनांक 22 जनवरी 2024 का दिन इतिहास में स्वर्णाक्षरों से लिखा जायेगा। इस दिन माता जगदम्बे की कृपा से प्रभु श्रीराम की जन्मभूमि पर बने दिव्य व विशाल मंदिर में प्रभु रामलला जी की प्राण-प्रतिष्ठा का कार्यक्रम भव्य समारोह के बीच सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर जहाँ पूरा देश भक्तिभाव से आल्हादित था, वहीं शहडोल ज़िले के ब्यौहारी क्षेत्र में स्थित पंचज्योति शक्तितीर्थ सिद्धाश्रम, जहाँ 27 वर्षों से माता भगवती आदिशक्ति जगत् जननी की आराधना अनवरत चल रही है, राममय हो उठा।

श्री रामलला जी के प्राण-प्रतिष्ठा समारोह और सनातनधर्म को अक्षुण्य बनाए रखने के लिए 'माँ' की साधना-आराधना के बीच अपराह्न 03 बजे, सभी सिद्धाश्रमवासी और हज़ारों की संख्या में सिद्धाश्रम पहुँचे सद्गुरुदेव श्री शक्तिपुत्र जी महाराज के शिष्य व भक्तगण मूलध्वज साधना मंदिर पहुँचे और राम नाम धुन में लीन हो गए। इससे पहले भगवती मानव कल्याण संगठन की केन्द्रीय अध्यक्ष शक्तिस्वरूपा बहन सिद्धाश्रमरत्न पूजा

शुक्ला जी ने प्रभु श्रीराम की दिव्य छवि के समक्ष दीप प्रज्जवलित करके कार्यक्रम का शुभारम्भ किया। इस पावन पुनीत अवसर पर पंचज्योति शक्तितीर्थ सिद्धाश्रम ट्रस्ट की प्रधान न्यासी शक्तिस्वरूपा बहन सिद्धाश्रमरत्न ज्योति शुक्ला जी और सिद्धाश्रमरत्न रजत मिश्रा जी की उपस्थिति उल्लेखनीय रही।

प्रभु श्रीराम के भजन एवं गीतों के साथ ही नित्यप्रति की तरह सायं 04:15 बजे मूलध्वज साधना मंदिर में 'माँ'-गुरुवर की दिव्य आरती का क्रम पूर्ण किया गया, पश्चात् सभी भक्तगण श्री दुर्गाचालीसा अखण्ड पाठ मंदिर पहुँचे और वहाँ सद्गुरुदेव जी महाराज के द्वारा सम्पन्न की जा रही दिव्य आरती का लाभ प्राप्त किया।

तदोपरान्त, सभी ने परम पूज्य गुरुवरश्री के श्रीचरणों को स्पर्श करके आशीर्वाद प्राप्त करते हुए पंचमेवा और पंचामृत से युक्त प्रसाद ग्रहण करके अपने जीवन को कृतार्थ किया।

सम्पन्न हुआ 28वाँ सिद्धाश्रम स्थापना दिवस

चल चुका है युग परिवर्तन का चक्र

पंचज्योति शक्तितीर्थ सिद्धाश्रम के 28वें स्थापना दिवस, 23 जनवरी 2024 की प्रातःकालीन बेला अत्यन्त ही मनोरम दृश्य था। हज़ारों की संख्या में सद्गुरुदेव श्री शक्तिपुत्र जी महाराज के शिष्य व भक्तगण साधनात्मक परिवेश से अलंकृत होकर मूलध्वज साधना मंदिर पहुंचे और दिव्य साधनाक्रमों व आरती का लाभ प्राप्त किया। तत्पश्चात् 06:30 बजे श्री दुर्गाचालीसा अखण्ड पाठ मंदिर में आरतीक्रम के बाद 07:00 बजे मूलध्वज साधना मंदिर में नवीन शक्तिध्वज का रोहण किया गया एवं परम पूज्य गुरुवरश्री ने 'माँ' की पूजा-अर्चना का क्रम सम्पन्न किया तथा मंदिर के मुख्य घण्टे में चुनरी बांधी। इस अवसर पर पूजनीया शक्तिमयी माता जी और शक्तिस्वरूपा बहनों की उपस्थिति उल्लेखनीय रही। मूलध्वज साधना मंदिर में पूजनक्रम के पश्चात् सभी भक्तों ने क्रमबद्ध रूप से गुरुवरश्री के चरणों को नमन करते हुये आशीर्वाद प्राप्त किया।

ज्ञातव्य है कि पंचज्योति शक्तितीर्थ सिद्धाश्रम की स्थापना को 27 वर्ष पूर्ण हो चुके हैं और इस दिव्यधाम के स्थापना दिवस के गौरवशाली अवसर पर भगवती मानव कल्याण संगठन एवं पंचज्योति शक्तितीर्थ सिद्धाश्रम ट्रस्ट के संयुक्त तत्त्वावधान में प्रतिवर्ष 23 जनवरी को विविध मनभावन कार्यक्रम आयोजित होते हैं।

सद्गुरुदेव श्री शक्तिपुत्र जी महाराज के आशीर्वाद से सिद्धाश्रम स्थापना दिवस पर बच्चों व युवाओं के स्वास्थ्य एवं चेतनाशक्ति के विकास के लिये सिद्धाश्रम में दौड़ प्रतियोगिता व गीत-संगीत के कार्यक्रम आयोजित होते हैं। इतना ही नहीं, योगभारती विवाह पद्धति से सामूहिक विवाह कार्यक्रम भी विधि-विधान के साथ सम्पन्न कराया जाता है।

मूलध्वज साधना मंदिर के मुख्य घंढे पर चुनरी बांधते हुए गुरुवरश्री और उपस्थित पूजनीया शक्तिमयी माता जी, शक्तिस्वरूपा बहनें, सिद्धाश्रम चेतना आरूणी जी, शिष्यगण तथा प्रणाम एवं प्रसाद वितरण का क्रम

चिन्तन प्रदान करते हुए सद्गुरुदेव परमहंस योगीराज श्री शक्तिपुत्र जी महाराज

दौड़ प्रतियोगिता प्रारम्भ होने से पूर्व दर्शकदीर्घा में बैठे जनसमुदाय को आशीर्वाद प्रदान करते हुए परम पूज्य गुरुवरश्री ने कहा कि ''27 वर्ष पूर्व आज ही के दिन इस पवित्र स्थल पर 'माँ' का मूलध्वज फहराया गया था और तब से यहाँ 'माँ' की साधना, अनुष्ठान और श्री दुर्गाचालीसा का अखण्ड पाठ अनवरत चल रहा है। इतना ही नहीं, तीनों धाराओं के माध्यम से जनकल्याण का सतत प्रवाह चल रहा है, जिससे देश के करोड़ों लोगों के जीवन में परिवर्तन आया है। इस दिव्यधाम से अनेक साधना, अनुष्ठान और शक्ति चेतना जनजागरण शिविर पूर्ण किए जा चुके हैं और यह प्रवाह निरन्तर गतिमान है। यहाँ से युगपरिवर्तन का शंखनाद किया गया, महाशक्ति शंखनाद किया जा चुका है और युगपरिवर्तन के लिए सतत कार्य किया जा रहा है।

इस शांत, एकांत स्थल से नित्य की जा रहीं एकांत की साधनाएं और 'माँ' के अखण्ड गुणगान की ऊर्जा से युगपरिवर्तन का चक्र चल चुका है और समाज को इस बात का भान कराया जा चुका है। कल ही दिनांक 22 जनवरी को अयोध्या में प्रभु श्रीराम की मूर्ति का स्थापना दिवस था। जब किसी स्थान पर अनीति-अन्याय-अधर्म चरम पर पहुंच जाता है, आस्था में कमी आ जाती है, तो उस स्थान की ऊर्जा नष्ट होने लगती है, तब उस ऊर्जा को वापस प्राप्त करने के लिए घोर प्रायश्चित करना पड़ता है और पाँच सौ सालों से जनमानस में एक प्रायश्चित का भाव था, अपने आदर्श को, अपने श्रीराम को पाने के लिए अथक त्याग करना पड़ा और उसी प्रायश्चित के फलस्वरूप आज यह पावन पुनीत दिन देखने को मिला है।

आप सभी जानते हैं कि देवताओं पर भी संकट आता है, तो उस संकट का निदान माता भगवती आदिशक्ति जगत् जननी जगदम्बा ही करती हैं और उन्हीं की कृपा से अयोध्या में प्रभु श्रीराम की प्राण-प्रतिष्ठा का

कार्य एक शक्तिसाधक के द्वारा सम्पन्न किया गया। 'माँ' के श्रीचरणों पर हम प्रार्थना करते हैं कि परिवर्तन का यह क्रम निरन्तर चलता रहे।''

परम पूज्य गुरुवरश्री ने कहा कि ''सिद्धाश्रम स्थापना दिवस पर कुछ क्रम रखे गए हैं, जिनमें अखिल भारतीय सिद्धाश्रम दौड़ प्रतियोगिता, अखिल भारतीय योगभारती सामूहिक विवाह कार्यक्रम और अखिल भारतीय सुर-संध्या एवं कविसम्मेलन शामिल हैं। स्थापना दिवस पर कोई बड़ा कार्यक्रम नहीं रखा जाता। वृहद धार्मिक व समाजिक क्रमों की शृंखला यज्ञस्थल मंदिर बनने के बाद प्रारम्भ किए जाने का विचार है।''

अखिल भारतीय सिद्धाश्रम दौड़ प्रतियोगिता

सिद्धाश्रम स्थापना दिवस के पावन अवसर पर पंचज्योति शक्तितीर्थ सिद्धाश्रम में सम्पन्न विविध कार्यक्रमों में प्रातः 09:00 बजे से भगवती मानव कल्याण संगठन एवं पंचज्योति शक्तितीर्थ सिद्धाश्रम ट्रस्ट के संयुक्त तत्त्वावधान में आयोजित एकादश अखिल भारतीय सिद्धाश्रम दौड़ प्रतियोगिता कार्यक्रम में संगठन की विभिन्न शाखाओं से पहुंचे सैकड़ों प्रतिभागियों और आश्रम में निवासरत बालक-बालिकाओं ने हिस्सा लिया।

प्रतियोगिता में प्रथम, द्वितीय व तृतीय स्थान प्राप्त विजेता प्रतिभागियों को शक्तिस्वरूपा बहनों ने विजेता मेडल, प्रमाणपत्र व पुरस्कार राशि प्रदान की।

दिनांक 23 जनवरी 2024 को 28वें सिद्धाश्रम स्थापना दिवस के पावन अवसर पर आयोजित 'अखिल भारतीय सिद्धाश्रम दौड़ प्रतियोगिता' का शुभारम्भ 'माँ'-गुरुवर के जयकारों के साथ हुआ। इसमें बालिका और बालक आयु वर्ग 05 से 10 वर्ष से कम के विजेता प्रतिभागियों को 100 मीटर की दौड़ में प्रथम, द्वितीय व तृतीय पुरस्कार क्रमशः कु. मनीषा रैकवार पुत्री शिवलाल रैकवार, निवासी-सिद्धाश्रम, तह.-ब्यौहारी, ज़िला-शहडोल

सिद्धाश्रम दौड़ प्रतियोगिता में भाग लेते हुए प्रतिभागी और उपस्थित दर्शकगण

सिद्धाश्रम दौड़ प्रतियोगिता के विजेता प्रतिभागियों को आशीर्वाद प्रदान करते हुए परम पूज्य गुरुवरश्री और पुरस्कार प्रदान करतीं हुईं शक्तिस्वरूपा बहनें

(म.प्र.), मनोज रैकवार पुत्र शिवलाल रैकवार, निवासी-सिद्धाश्रम, तह.-ब्यौहारी, ज़िला-शहडोल (म.प्र.) को पच्चीस-पच्चीस सौ रुपए, कु. दिव्यांशी साहू पुत्री संतोष कुमार साहू, निवासी ग्राम-ऊपराडोल, ज़िला-सिंगरौली, ज़िला-शहडोल (म.प्र.), शिव चतुर्वेदी पुत्र दिलीप चौबे, निवासी-सिद्धाश्रम, ज़िला-शहडोल (म.प्र.)को दो-दो हज़ार रुपए, कु. आराध्या शुक्ला पुत्री रंजना शुक्ला, निवासी-सिद्धाश्रम, ज़िला-शहडोल (म.प्र.), सुमित कुमार निषाद पुत्र श्याम बाबू निषाद, निवासी-385 चन्दन नगर, हंसपुर, नौबस्ता, कानपुर नगर (उ.प्र.) को पन्द्रह-पन्द्रह सौ रुपए नक़द पुरस्कार, प्रमाणपत्र व विजेता मेडल प्रदान किये गये।

सिद्धाश्रम दौड़ प्रतियोगिता के समय मंच पर उपस्थित पूजनीया शक्तिमयी माता जी

बालिका-बालक 10 से 16 वर्ष से कम आयु वर्ग के विजेता प्रतिभागियों को 200 मीटर की दौड़ में प्रथम, द्वितीय व तृतीय पुरस्कार क्रमशः कु. आकृती त्रिपाठी पुत्री शैलेन्द्र त्रिपाठी, निवासी- सिद्धाश्रम, तह.-ब्यौहारी, ज़िला-शहडोल (म.प्र.), अनुराग सेन पुत्र राजकुमार सेन, निवासी ग्राम-बढखेरा, पो.-रघुराजनगर, ज़िला-सतना (म.प्र.) को पैंतीस-पैंतीस सौ रुपए, स्मृति केवट पुत्री अनिल केवट, निवासी ग्राम-टांघर, पो.भोलहरा, तह.-ब्यौहारी, ज़िला-शहडोल (म.प्र.), रितेश यादव पुत्र अभयराज यादव, निवासी ग्राम-गिधार, तह.-लालापुर, ज़िला-प्रयागराज (उ.प्र.) को पच्चीस-पच्चीस सौ रुपए, प्राची पटेल पुत्री गंगा प्रसाद, निवासी ग्राम-पैकिनिया, पो.-झलवार, तह.-रामपुर नैकिन, ज़िला-सीधी (म.प्र.), सुनील कुमार भाटिया पुत्र सुरेश कुमार भाटिया, निवासी ग्राम-जोंधी, पो.-मझियारी, तह.-बारा, ज़िला-प्रयागराज (उ.प्र.) को दो-दो हज़ार रुपए नक़द पुरस्कार, प्रमाणपत्र व विजेता मेडल प्रदान किये गये।

बालिका-बालक 16 से 40 वर्ष आयु वर्ग के विजेता प्रतिभागियों को 300 मीटर की दौड़ में प्रथम, द्वितीय व तृतीय पुरस्कार क्रमशः दुर्गा सेन पुत्री संतोष सेन, निवासी-आदर्श नगर, वार्ड नं. 13, तह.-रघुराजनगर, ज़िला-सतना (म.प्र.), बृजेश सिंह पुत्र महाराज सिंह, निवासी-हनुमान नगर, नई बस्ती, ज़िला-सतना (म.प्र.) को छह-छह हज़ार रुपए, संगीता विश्वकर्मा पुत्री बीरेन्द्र चन्द्र विश्वकर्मा, निवासी ग्राम-मलूकपुर, पो.-एरायाखाना,

मूलध्वज साधना मंदिर पर विवाह के क्रम में बैठे हुए नवयुगल

तह.-खागा, ज़िला-फतेहपुर (उ.प्र.), सचिन मिश्रा पुत्र रजनीश मिश्रा, निवासी-चाणक्यपुरी कालोनी, गली नं.-01, ज़िला-सतना (म.प्र.) को चार-चार हज़ार रुपए और सपना लोधी पुत्री भगवान सिंह लोधी, निवासी ग्राम-बेलबाड़ा, पो. व तह.-तेन्दूखेड़ा, ज़िला-दमोह (म.प्र.), आदर्श कुशवाहा पुत्र ज्ञानी प्रसाद कुशवाहा, निवासी ग्राम-कुबरी, पो.-नेहुती, तह.-बिरसिंहपुर, ज़िला-सतना (म.प्र.) को तीन-तीन हज़ार रुपए नकद पुरस्कार, प्रमाणपत्र व विजेता मेडल प्रदान किये गये।

योगभारती विवाह पद्धति से 09 नवयुगल परिणयसूत्र में बंधे

सिद्धाश्रम स्थापना दिवस के पावन अवसर पर परम पूज्य गुरुवरश्री के आशीर्वादस्वरूप मूलध्वज साधना मंदिर में योगभारती विवाह पद्धति से विधि-विधान के साथ पच्चीसवां सामूहिक वैवाहिक कार्यक्रम, हर्षोल्लास से परिपूर्ण वातावरण में सम्पन्न हुआ। इसमें 09 नवयुगलों ने अपने माता-पिता एवं परिजनों की सहमति से परिणयसूत्र में बंधकर आजीवन साथ निभाने का वचन एक-दूसरे को दिया।

सभी नवयुगलों ने सर्वप्रथम दाहिने हाथ में संकल्प सामग्री लेकर माता भगवती, परम पूज्य गुरुवरश्री एवं उपस्थित जनसमुदाय को साक्षी मानकर एक-दूसरे को पति-पत्नी के रूप में वरण करने का संकल्प किया। तत्पश्चात्, एक-दूसरे को माल्यार्पण करते हुये सभी ने गठबन्धन, मंगलसूत्र एवं सिन्दूर समर्पण की रस्में पूर्ण कीं। तदुपरान्त नवयुगलों ने पृथ्वी, जल, अग्नि, आकाश, वायु तत्त्व एवं दृश्य तथा अदृश्य जगत् की स्थापित समस्त शक्तियों को साक्षी मानकर सात फेरे लगाये और आजीवन साथ निभाने का संकल्प लिया। उपर्युक्त कार्यक्रम में शक्तिस्वरूपा बहनों ने सभी नवयुगलों का गठबंधन किया एवं उपहार प्रदान करके सभी को अपना स्नेह एवं

आशीर्वाद प्रदान किया। विवाह सम्पन्न होने के बाद आरतीक्रम सम्पन्न किया गया तथा सायंकालीन बेला में सभी नवयुगलों ने परम पूज्य गुरुवरश्री का चरणवन्दन करके सुखद दाम्पत्य जीवन का आशीर्वाद प्राप्त किया।

ऋषिवर सद्गुरुदेव परमहंस योगीराज श्री शक्तिपुत्र जी महाराज ने भगवती मानव कल्याण संगठन के लाखों कार्यकर्ताओं को नशामुक्त, मांसाहारमुक्त, चरित्रवान्, चेतनावान्, पुरुषार्थी व परोपकारमय जीवन जीने और मानवता की सेवा, धर्मरक्षा एवं राष्ट्र की रक्षा का संकल्प दिलाया है।

विदित है कि योगभारती पद्धति से विवाह सम्पन्न कराने में जहां फ़िजूलखर्ची नहीं होती, वहीं वरपक्ष की तरह ही कन्यापक्ष को भी बराबर का सम्मान मिलता है। वर्तमान समय में समाज के बीच जिस तरह वैवाहिक कार्यक्रमों में फ़िजूलखर्ची हावी है, उससे कन्यापक्ष को परेशानियों का सामना करना पड़ता है। इसीलिये दहेजप्रथारूपी दानव तथा फ़िजूलखर्च से परे हटकर, सद्गुरुदेव जी के आशीर्वाद से हर वर्ष नवयुगलों का विवाह सिद्धाश्रम स्थापना दिवस पर सम्पन्न करवाया जाता है।

स्थापना दिवस पर जिन नवयुगलों का शुभ विवाह सम्पन्न हुआ, उनके नाम इस प्रकार से हैं--

जयसिंह संग संगीता लोधी, सतेन्द्र सिंह गौर संग दीपा सिंह, नंदराम संग प्रियंका, आदित्य कुमार संग पूनम साहू, विवेक स्थापक संग रेखा तेकाम, विकास सिंह लोधी संग

'माँ' अन्नपूर्णा भण्डारे में महाप्रसाद प्राप्त करते हुए भक्तगण और हलुआ प्रसाद के वितरण का क्रम

कामिनी देवी, भैयाराम वैश्य संग सरोज देवी, धर्मेन्द्र साकेत संग आरती बेनिया और नितिन तिवारी संग चारुलोचन।

अखिलभारतीय सुर-संध्या एवं कविसम्मेलन

सिद्धाश्रम स्थापना दिवस पर आयोजित एकादश अखिल भारतीय 'सिद्धाश्रम सुर-संध्या एवं कविसम्मेलन' 2024 में शामिल गीत गायक एवं काव्यपाठी प्रतिभाओं के साथ ही श्रोताओं से कार्यक्रम स्थल (प्रणामभवन का विशाल कक्ष) भरा हुआ था। सभी ने भक्तिरस से परिपूर्ण गीत-संगीत और ओज से परिपूर्ण काव्यपाठ का आनंद रात्रि 08:00 बजे से 10:15 बजे तक उठाया। इस अवसर पर उपस्थित भगवती मानव कल्याण संगठन के केन्द्रीय महासचिव सिद्धाश्रमरत्न सौरभ द्विवेदी (अनूप) जी और संगठन के केन्द्रीय मुख्य सचिव सिद्धाश्रमरत्न आशीष शुक्ला 'राजू भइया' जी ने कवियों व गायकों का उत्साहवर्धन किया।

सुर-संध्या एवं कविसम्मेलन में उपस्थित सिद्धाश्रमरत्न सौरभ द्विवेदी जी एवं सिद्धाश्रमरत्न आशीष शुक्ला जी

सद्गुरुदेव जी के शिष्यों में से गीत-संगीत व साहित्य में अभिरुचि रखने वाले सदस्यों ने भक्तिरस से परिपूर्ण भावगीत व काव्यपाठ प्रस्तुत किए। कार्यक्रम के समापन से पूर्व सिद्धाश्रमरत्न सौरभ द्विवेदी जी ने अपनी सरस वाणी में सीताराम, सीताराम, सीताराम, सीताराम, भजन प्रस्तुत करके श्रोताओं को मन्त्रमुग्ध कर दिया। प्रस्तुत भक्तिगीतों व काव्यपाठ की प्रारम्भिक पंक्तियां इस प्रकार हैं:-

नेहा साहू जी, सिंगरौली- संघर्षों का जीवन अपना, होठों पर मुस्कान। धर्मयुद्ध के योद्धा हैं हम, ये अपनी पहचान।। परसू सिंह जी, सिद्धाश्रम- हे गुरुवर तेरी महिमा न जाने कोई, हे गुरुवर तेरा मर्म न जाने कोई। अवन्ती लोधी जी, सागर- थोड़ा ध्यान लगाओ गुरुवर दौड़े आयेंगे। दीपू तिवारी जी, भोजपुर, बिहार- कबन योग्यता परख्यो भवानी तुम,...। अंशिका योगभारती, कानपुर- मुझे दास बना लो माँ अहसान तुम्हारा होगा। बाबूलाल विश्वकर्मा जी, दमोह- फिर से आई अबके बरस की घड़ी स्थापना दिवस की,...। संगीता लोधी जी, भोपाल- ज्ञान के सब ग्रन्थ कहते, ऋषि-मुनि सब सन्त कहते,...।। प्रतीक तिवारी जी, सिद्धाश्रम- गुरुवर करुणा के सागर, गुरु जैसा नहीं कोई और। सिद्धाश्रम माँ का द्वारा, कृपा बरस रही चहुँओर।।

शशि त्रिपाठी जी, गुरुग्राम, हरियाणा- मेरे गुरुवर जी हमारे सबके गुरुवर जी। रामलाल कुशवाहा जी, कन्नौज- हमको दिया जो माँ ने संतुष्ट होगए, लोग पाकर करोड़ों असंतुष्ट रह गए। कु. समृद्धि जी, गाज़ियाबाद- न कर्म से मिला न अधिकार से मिला न मुझे इस झूठे संसार से मिला। मैंने जो भी पाया अपने जीवन में, वो मुझे मेरे गुरुवर के दरबार से मिला।। सुनील रैकवार, दमोह- माँ-गुरुवर के चरणों में शत-शत नमन हमारा। रवि पटेल, कुरुद, छत्तीसगढ़- पावन है धरती बिलासपुर के,...। धर्मेन्द्र साकेत जी, सिंगरौली- गुरुवर तेरे चरणों की, मइया तेरे चरणों की अगर धूल जो मिल जाए। महेन्द्र पटेल जी, सिद्धाश्रम- नगरी हो सिद्धाश्रम की, गुरुवर सा ठिकाना हो। जगदीश सिंह जी, जबलपुर- जिन्दगी भर सफर पर रहे, पर वहीं के वहीं रह गए। धनंजय चतुर्वेदी, सिद्धाश्रम- नेता हमारे ईद के चाँद होते हैं, झूठ की दुकान होते हैं। आरती मिश्रा जी, सिद्धाश्रम- माँ-गुरुवर की महिमा को गाते रहो, परहित में जीवन लगाते रहो।

कार्यक्रम का संचालन करते हुए रमेशचन्द्र मिश्रा जी, कानपुर के द्वारा प्रस्तुत काव्यपाठ- कण-कण आज पुकार उठा है, मन के सभी विकार हटा दो। खण्ड-खण्ड प्यासी धरती पर, अविरल रस की धार बहा दो। बाबूलाल विश्वकर्मा जी, दमोह- छाया शीतल गुरुचरणों की, शक्ति है प्रबल गुरुचरणों की।

इस भावगीत के साथ ही कार्यक्रम का समापन हुआ।

सिद्धाश्रम स्थापना दिवस पर आयोजित सुर-संध्या एवं कविसम्मेलन में भावसुमन प्रस्तुत करते हुए गीतगायक, काव्यपाठी व उपस्थित श्रोतागण

पंचज्योति शक्तितीर्थ सिद्धाश्रम में हर्षोल्लासपूर्वक मनाया गया 75वाँ गणतंत्र दिवस

समूचे देश के साथ ही अध्यात्मिकस्थली पंचज्योति शक्तितीर्थ सिद्धाश्रम पर राष्ट्रीय पर्व गणतंत्र दिवस, 26 जनवरी को हर्षोल्लासपूर्वक मनाया गया। सिद्धाश्रमवासी और 'माँ' के भक्त, इस अवसर पर आयोजित ध्वजारोहण कार्यक्रम में पूरे उत्साह के साथ शामिल हुए।

अतिउत्साहपूर्वक सम्पन्न हुए इस पर्व पर सिद्धाश्रम में रहने वाले छात्र-छात्राओं और गुरुभाई-बहनों ने राष्ट्रगान के साथ ही देशभक्ति से परिपूर्ण भावगीत व स्वरचित काव्य की प्रस्तुति दी।

इस अवसर पर सिद्धाश्रम पहुंचे गुरुभाई-बहनों, 'माँ' के भक्तों और सिद्धाश्रमवासियों ने प्रातःकालीन बेला में नित्यप्रति सम्पन्न होने वाले आरतीक्रम में सम्मिलित होने के उपरान्त, सद्गुरुदेव जी महाराज के श्रीचरणों में नतमस्तक होकर आशीर्वाद प्राप्त किया।

परम पूज्य गुरुवरश्री से आशीर्वाद प्राप्त करने के पश्चात् सभी प्रातः 07:45 बजे सिद्धाश्रम में आयोजित गणतंत्र दिवस समारोह में सम्मिलित हुए। इस अवसर पर पंचज्योति शक्तितीर्थ सिद्धाश्रम ट्रस्ट की प्रधान न्यासी शक्तिस्वरूपा बहन सिद्धाश्रमरत्न ज्योति शुक्ला जी ने तिरंगेध्वज का रोहण किया और इसके साथ ही कार्यक्रमस्थल पर उपस्थित गुरुभाई-बहनों व भक्तों के मुख से राष्ट्रगान जन-गण-मन अधिनायक जय हे...., की सुमधुर ध्वनि से वातावरण शांत, स्निग्ध और अतिमनभावन हो उठा।

राष्ट्रगान के उपरान्त, सिद्धाश्रमवासी छात्र-छात्राओं, बच्चों और

काव्यपाठ करते हुए सिद्धाश्रम चेतना अद्वैत जी व देशभक्ति से परिपूर्ण गीतगायन एवं काव्यपाठ के क्रम में छात्र-छात्राएं तथा गुरुभाई-बहन

उद्‌बोधन के क्रम में सिद्धाश्रमरत्न सौरभ द्विवेदी जी

गुरुभाई-बहनों ने देशभक्ति से परिपूर्ण गीत व कविताएं प्रस्तुत कीं, जिसके प्रारम्भिक अंश इस प्रकार हैं--

रामलाल कुशवाहा जी, दमोह- ये देश के अन्नदाता की बात है उसके अपमान की, कैसी दुर्दशा हो रही है भइया आज किसान की। मंगल सिंह जी, सिद्धाश्रम- ऐ वतन जिन्दगी पर, श्वास और धड़कनों पर कर्ज़ तुम्हारा है। शिव चतुर्वेदी जी, सिद्धाश्रम- बलिदानियों का सपना तब सच हुआ, जब देश आज़ाद हुआ। सिद्धाश्रम चेतना अद्वैत जी- एक बराबर सबके लिए विधान हुआ था, सबके लिए लागू संविधान हुआ था। लक्ष्य विश्वकर्मा जी, सिद्धाश्रम- विनती सुन लो भगवान्, हम सब बालक हैं नादान। गगन विश्वकर्मा जी, दमोह- जियत रहें कि हम जाकर मरें, हमारी समझ में नहिं आवत कि क्या करें? श्वेता और महक जी, सिद्धाश्रम- लेकर अपने हाथ तिरंगा, जन-गण-मन हम गायेंगे। प्रतीक मिश्रा जी, सिद्धाश्रम- लहर-लहर लहराए हो, लहर-लहर लहराए मोरा झंडा तिरंगा। गोल्डी शुक्ला जी, सिद्धाश्रम- खुशी आज के दिन मनायेंगे हम,...। प्रकाशचन्द्र सोनी जी, सिद्धाश्रम- हे ज्योतिपुञ्ज हे ज्ञानपुञ्ज, सतयुग लाने का संकल्प लिया। कामिनी सिंह जी, सिद्धाश्रम- देश हमारा हमको प्यारा, इसमें है जाँ कुर्बान। गजेन्द्र सिंह साहू जी, पन्ना- हम भारत के वीर हमेशा वतन पर मिटते आए हैं। बाबूलाल विश्वकर्मा जी, दमोह- सिसक-सिसक कर रोए आत्मा, सैनिक वीर जवानों की। कैसी दशा बना दी तुमने मेरे हिन्दुस्तान की।।

भावगीतों की शृंखला समाप्त होने के बाद गणतंत्र दिवस समारोह की समापन बेला पर भारतीय शक्ति चेतना पार्टी के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष सिद्धाश्रमरत्न सौरभ द्विवेदी जी ने उपस्थित गुरुभाई-बहनों, छात्र-छात्राओं तथा समस्त देशवासियों को इस राष्ट्रीय पर्व की हार्दिक शुभकामनाएं देते हुए अपने उद्‌बोधन में कहा कि ''जब हमें स्वतंत्रता मिल गई, तब हमें ज़रूरत थी एक ऐसे विधान की, जिससे सभी को समान अधिकार मिल सके और 26 जनवरी 1950 को हमें वह संविधान के रूप में प्राप्त हुआ।

जैसा कि सर्वविदित है कि हमारे देश को सोने की चिड़िया कहा जाता था, लेकिन विदेशी आक्रांताओं ने भारत आकर, यहाँ की सम्पत्ति को भरपूर लूटा और साथ ही जाति, धर्म व सम्प्रदायिकता का विष समाजिक समरसता में घोल दिया, जिससे यहाँ की एकता, प्रेम व भाईचारा, सबकुछ छिन्न-भिन्न हो गया। तथापि, ऐसे संविधान की आवश्यकता महसूस हुई, जिससे हम पुनः एकसूत्र में बंध सकें। आज स्थिति यह है कि पूरी दुनिया भारत की ओर निहार रही है और इस गणतंत्र दिवस पर्व पर हमें पुनः संकल्पित होना है कि हमारे संविधान में जो भी उल्लिखित है, उसे पूरी तरह से लागू करना है।

प्राचीनकाल में इस संविधान से भी बड़ा और उत्तम संविधान हमारे देश में लागू था। उपनिषदों में दर्शित है कि- 'आत्मवत् सर्वभूतेषु।' अर्थात् सभी प्राणियों को अपनी आत्मा के समान मानो। आज खुशी की बात है कि परमसत्ता माता आदिशक्ति जगत् जननी जगदम्बा की कृपा से अयोध्या में भगवान् श्रीराम की मूर्ति की स्थापना हो चुकी है और वह दिन दूर नहीं, जब पुनः हमारे देश में रामराज्य की स्थापना होगी, लेकिन इसके लिए परम पूज्य सद्गुरुदेव श्री शक्तिपुत्र जी महाराज की विचारधारा को अपनाना होगा, नशे-मांसाहार से मुक्त चरित्रवान्, चेतनावान्, पुरुषार्थी और परोपकारमय जीवन जीना होगा। चेतनावान् समाज के निर्माण के लिए गुरुवरश्री ने भगवती मानव कल्याण संगठन का गठन किया है और इस संगठन से सभी जाति, धर्म, सम्प्रदाय के लोग जुड़कर समाज व देश के उत्थान के लिए कार्य कर रहे हैं।

अभी 23 जनवरी को यहाँ सिद्धाश्रम स्थापना दिवस मनाया गया और आज 26 जनवरी को हमें राष्ट्रीय पर्व गणतंत्र दिवस मनाने का सौभाग्य मिला। यदि हमें समाज को, देश को उन्नति की ओर ले जाना है, तो सद्गुरुदेव श्री शक्तिपुत्र जी महाराज की विचारधारा के अनुरूप नशे-मांसाहार से मुक्त चरित्रवान्, चेतनावान्, पुरुषार्थी एवं परोपकारी समाज का निर्माण करना होगा और यदि हम यह कार्य कर रहे हैं, तो समझिए कि देश के संविधान के अनुरूप कार्य कर रहे हैं, देश की स्वतंत्रता के लिए मर-मिटने वाले वीर सेनानियों के सपनों का भारत बनाने के लिए कार्य कर रहे हैं।''

मिष्टान्न वितरण के साथ गणतंत्र दिवस समारोह का समापन हुआ। पूरे कार्यक्रम में सिद्धाश्रमरत्न अजय अवस्थी जी, सिद्धाश्रमरत्न रजत मिश्रा जी और सिद्धाश्रमरत्न आशीष शुक्ला (राजू भइया) जी की उपस्थिति विशेष रही। कार्यक्रम का संचालन भगवती मानव कल्याण संगठन के केन्द्रीय प्रवक्ता रमेशचन्द्र मिश्रा जी ने किया।

गणतंत्र दिवस समारोह में कार्यक्रम का आनन्द उठाते हुए गुरुभाई-बहन

नशाविरोधी जनान्दोलन

शराबमाफ़ियाओं के विरुद्ध लगातार चल रहा है आन्दोलन

भगवती मानव कल्याण संगठन एवं भारतीय शक्ति चेतना पार्टी के कार्यकर्ता अपने नागरिक कर्त्तव्य का परिचय देते हुए अवैध शराब परिवहन व विक्रय को रोकने के लिए सतत प्रयत्नशील हैं। उनके द्वारा पुलिस को सूचना देकर शराब ज़ब्त करवाने का सिलसिला एक लम्बे अर्से से जारी है।

इसी क्रम में, दिनांक 25 दिसम्बर को सुबह लगभग 08:30 बजे दमोह ज़िले के बटियागढ़ थाने की केरबना चौकी अन्तर्गत गूगरा ग्राम, टॉवर के पास दो पेटी शराब पकड़ी गई। आरोपी आकाश चौबे, निवासी-छतरपुर और गोपाल यादव, निवासी ग्राम-खडैरी, ज़िला-दमोह, मोटरसाइकिल क्रमांक-एमपी 20, एनवाई/6397 से शराब लेजा रहे थे।

दिनांक 25 दिसम्बर को दोपहर 12:00 बजे दमोह ज़िले के तेंदूखेड़ा थानान्तर्गत तारादेही रोड पर ग्राम-चौरई के पास चार पेटी देशी मसाला शराब पकड़ी गई। आरोपी सुनील सिंह, मुकेश विश्वकर्मा और नरेन्द्र सिंह, चारपहिया वाहन बोलेरो क्रमांक-एमपी 34, सीए/3844 से शराब लेजा रहे थे।

दिनांक 26 दिसम्बर को सायंकाल 07:00 बजे दमोह ज़िले के पथरिया थाने की जेरठ चौकी अन्तर्गत चिरौला-असलाना के बीच 100 पाव देशी प्लेन, 50 पाव देशी मसाला और 24 पाव अंग्रेज़ी शराब, मैकडॉवल पकड़ी गई। दो आरोपी मोटरसाइकिल से शराब लेजा रहे थे, जो कि मौके से फरार हो गए।

दिनांक 29 दिसम्बर को दोपहर 01:00 बजे पुनः दमोह ज़िले के पथरिया थाने की जेरठ चौकी अन्तर्गत चिरौला-असलाना के बीच तीन पेटी देशी मसाला शराब पकड़ी गई। आरोपी बल्लू ठाकुर मोटरसाइकिल से शराब लेजा रहा था।

दिनांक 01 जनवरी 2024 को सायंकाल 07:00 बजे दमोह ज़िले के दमोह कोतवाली क्षेत्रान्तर्गत सागर नाका, उत्सव विलास हॉटल के पास 50 पाव देशी मसाला शराब

दमोह ज़िले के बटियागढ़ थानान्तर्गत गूगरा गांव में टॉवर के पास पकड़ी गई शराब

दमोह ज़िले के तेन्दूखेड़ा थानान्तर्गत तारादेही रोड, चौरई गांव में पकड़ी गई शराब

दमोह ज़िले के पथरिया थानान्तर्गत असलाना -चिरौला के बीच पकड़ी गई शराब

दमोह ज़िले के पथरिया थानान्तर्गत असलाना -चिरौला के बीच पकड़ी गई शराब

और 12 पाव अंग्रेज़ी शराब (रम) पकड़ी गई। आरोपी धनसींग लोधी, मोटरसाइकिल क्रमांक-एमपी 34, एमक्यू/9543 से शराब लेजा रहा था।

दिनांक 02 जनवरी को रात्रि 09: 00 बजे दमोह ज़िले के पटेरा थानान्तर्गत ग्राम-वमनपुरा के पास 100 पाव देशी मसाला और 13 पाव देशी प्लेन शराब पकड़ी गई। आरोपी राहुल वर्मन पुत्र नंदू बर्मन, निवासी ग्राम- कुंडलपुर, एचएफ डीलक्स मोटरसाइकिल से शराब लेजा रहा था।

10 जनवरी को प्रात: 07:00 बजे दमोह ज़िले के तारादेही थानान्तर्गत ग्राम-बमनोदा में 50 पाव शराब पकड़ी गई। आरोपी दीपक राय और नरेन्द्र ठाकुर, मोटरसाइकिल क्रमांक-एमपी 20, जेडसी/1753 से शराब लेजा रहे थे।

दिनांक 10 जनवरी का दोपहर 12 बजे दमोह ज़िले के पटेरा थानान्तर्गत ब्लॉक तिराहा, पटेरा के पास 75 पाव देशी मसाला शराब पकड़ी गई। आरोपी प्रभु कुशवाहा पुत्र मिठाईलाल कुशवाहा, निवासी ग्राम-कुंडलपुर, मोटरसाइकिल क्रमांक- एमपी 34, एमएन/0574 से शराब लेजा रहा था।

दिनांक 10 जनवरी को रात्रि लगभग 9:30 बजे दमोह ज़िले के मगरोन थानान्तर्गत ग्राम सगरोन में 04 पेटी अंग्रेज़ी शराब पकड़ी गई। आरोपी सुरेन्द्र राय अपने एक साथी के साथ एचएफ डीलक्स मोटरसाइकिल से शराब लेजा रहे थे।

दिनांक 12 जनवरी को दोपहर लगभग 12:30 बजे दमोह ज़िले के मगरोन थानान्तर्गत ग्राम मंगोला तिगड्डा के पास एक पेटी देशी मसाला शराब पकड़ी गई। आरोपी सुनील अहिरवाल, निवासी ग्राम-मंगोला, मगरोन, टीवीएस मोटरसाइकिल से शराब लेजा रहा था।

दमोह ज़िले के कोतवाली क्षेत्रान्तर्गत दमोह शहर में सागर नाका पर पकड़ी गई शराब

दमोह ज़िले के पटेरा थानान्तर्गत वमनपुरा गांव के पास पकड़ी गई शराब

दमोह ज़िले के मगरोन थानान्तर्गत सगरोन गांव में पकड़ी गई शराब

दमोह ज़िले के तारादेही थानान्तर्गत बमनोदा गांव में पकड़ी गई शराब

दमोह ज़िले के मगरोन थानान्तर्गत मंगोला गांव में मंगोला तिगड्डा पर पकड़ी गई शराब

दमोह ज़िले के पटेरा थानान्तर्गत ब्लॉक तिराहा पटेरा के पास पकड़ी गई शराब

दिनांक 10 जनवरी को रात्रि 08:00 बजे दमोह ज़िले के बटियागढ़ थानान्तर्गत ग्राम-घूघस के पास दो पेटी देशी मसाला शराब पकड़ी गई। आरोपी मोहन रैकवार, बिना नम्बर की मोटरसाइकिल से शराब लेजा रहा था, जो कि पुलिस के पहुँचने से पहले ही फरार हो गया।

दिनांक 16 जनवरी को रात्रि 09:00 बजे दमोह ज़िले के तेन्दूखेड़ा थानान्तर्गत ग्राम-झालौन में 50 पाव देशी मसाला और 50 पाव देशी प्लेन शराब पकड़ी गई। आरोपी-जमुना आदिवासी पुत्र गुलाब आदिवासी, निवासी ग्राम-कोटातला, बिना नम्बर की मोटरसाइकिल से शराब लेजा रहा था।

दमोह ज़िले के बटियागढ़ थानान्तर्गत घूघस गांव के पास पकड़ी गई शराब

दमोह ज़िले के तेन्दूखेड़ा थानान्तर्गत झलौन गांव में पकड़ी गई शराब

नशाविरोधी जनान्दोलन के अन्तर्गत पकड़ी गई अवैध शराब की सूची

क्रमशः ...

1525	25.12.2023	टावर के पास, ग्राम-गूगरा, चौकी-केरबना थाना-बटियागढ़, ज़िला-दमोह (म.प्र.)	02 पेटी देशी लाल मसाला अवैध शराब, मोटरसाइकिल क्रमांक-एमपी 20, एनवाई/6397, दो आरोपी
1526	25.12.2023	तारादेही रोड पर, ग्राम-चौरई के पास, थाना-तेन्दूखेड़ा, ज़िला-दमोह (म.प्र.)	04 पेटी देशी लाल मसाला अवैध शराब, चारपहिया वाहन बोलेरो क्रमांक-एमपी 34, सीए/3844, दो आरोपी
1527	26.12.2023	चिरौला-असलाना गांव के बीच, चौकी-जेरठ थाना-पथरिया, ज़िला-दमोह (म.प्र.)	100 पाव देशी प्लेन, 50 पाव देशी मसाला और 24 पाव अंग्रेज़ी अवैध शराब, बिना नम्बर की मोटरसाइकिल, आरोपी फ़रार
1528	29.12.2023	चिरौला-असलाना गांव के बीच, चौकी-जेरठ थाना-पथरिया, ज़िला-दमोह (म.प्र.)	03 पेटी देशी लाल मसाला अवैध शराब, बिना नम्बर की मोटरसाइकिल, एक आरोपी
1529	01.01.2024	उत्सव विलास हॉटल के पास, दमोह थाना-कोतवाली, ज़िला-दमोह (म.प्र.)	50 पाव देशी मसाला और 12 पाव अंग्रेज़ी अवैध शराब, मोटरसाइकिल क्रमांक-एमपी 34, एमक्यू/9543, एक आरोपी
1530	02.01.2024	वमनपुरा गांव के पास, थाना-पटेरा, ज़िला-दमोह (म.प्र.)	100 पाव देशी लाल मसाला और 13 पाव देशी प्लेन अवैध शराब, बिना नम्बर की हीरो एचएफ डीलक्स मोटरसाइकिल, एक आरोपी
1531	10.01.2024	ग्राम-बमनोदा थाना-तारादेही, ज़िला-दमोह (म.प्र.)	50 पाव देशी मसाला अवैध शराब, मोटरसाइकिल क्रमांक-एमपी 20, जेडसी/1753, दो आरोपी
1532	10.01.2024	ब्लॉक तिराहा, पटेरा के पास, थाना-पटेरा, ज़िला-दमोह (म.प्र.)	75 पाव देशी मसाला अवैध शराब, मोटरसाइकिल क्रमांक- एमपी 34, एमएन/0574, एक आरोपी
1533	10.01.2024	ग्राम-सगरोन, थाना-मगरोन, ज़िला-दमोह (म.प्र.)	04 पेटी देशी अंग्रेज़ी अवैध शराब, बिना नम्बर की एचएफ डीलक्स मोटरसाइकिल, एक आरोपी
1534	10.01.2024	ग्राम-घूघस के पास थाना-बटियागढ़, ज़िला-दमोह (म.प्र.)	02 पेटी देशी अंग्रेज़ी अवैध शराब, बिना नम्बर की मोटरसाइकिल, एक आरोपी
1535	12.01.2024	मंगोला तिगड्डा, ग्राम-मंगोला, थाना-मगरोन, ज़िला-दमोह (म.प्र.)	01 पेटी देशी मसाला अवैध शराब, बिना नम्बर की टीवीएस मोटरसाइकिल, एक आरोपी
1536	16.01.2024	ग्राम-झलौन, थाना-तेन्दूखेड़ा, ज़िला-दमोह (म.प्र.)	50 पाव देशी मसाला और 50 पाव देशी प्लेन अवैध शराब, बिना नम्बर की टीवीएस मोटरसाइकिल, एक आरोपी

लेख क्रमांक-55

अध्यात्म गंगा गीता ज्ञान

क्रमशः ...

तेषामहं समुद्धर्ता मृत्युसंसारसागरात्।
भवामि नचिरात्पार्थ मय्यावेशितचेतसाम्॥

भावार्थ- हे अर्जुन! उन मुझमें चित्त लगाने वाले प्रेमी भक्तों का मैं शीघ्र ही मृत्यु रूप संसार-समुद्र से उद्धार करने वाला होता हूँ।

मय्येव मन आधत्स्व मयि बुद्धिं निवेशय।
निवसिष्यसि मय्येव अत ऊर्ध्वं न संशयः॥

भावार्थ- मुझमें मन को लगा और मुझमें ही बुद्धि को लगा, इसके उपरान्त तू मुझमें ही निवास करेगा, इसमें कुछ भी संशय नहीं है।

अथ चित्तं समाधातुं न शकोषि मयि स्थिरम्।
अभ्यासयोगेन ततो मामिच्छाप्तुं धनञ्जय॥

भावार्थ- यदि तू मन को मुझमें अचल स्थापन करने के लिए समर्थ नहीं है, तो हे अर्जुन! अभ्यासरूप (भगवान के नाम और गुणों का श्रवण, कीर्तन, मनन तथा श्वास द्वारा जप और भगवत्प्राप्तिविषयक शास्त्रों का पठन-पाठन इत्यादि चेष्टाएँ भगवत्प्राप्ति के लिए बारंबार करने का नाम 'अभ्यास' है) योग द्वारा मुझको प्राप्त होने के लिए इच्छा कर।

अभ्यासेऽप्यसमर्थोऽसि मत्कर्मपरमो भव।
मदर्थमपि कर्माणि कुर्वन्सिद्धिमवाप्स्यसि॥

भावार्थ- यदि तू उपर्युक्त अभ्यास में भी असमर्थ है, तो केवल मेरे लिए कर्म करने के ही परायण (स्वार्थ को त्यागकर तथा परमेश्वर को ही परम आश्रय और परम गति समझकर, निष्काम प्रेमभाव से सती-शिरोमणि, पतिव्रता स्त्री की भाँति मन, वाणी और शरीर द्वारा परमेश्वर के ही लिए यज्ञ, दान और तपादि सम्पूर्ण कर्तव्यकर्मों के करने का नाम 'भगवदर्थ कर्म करने के परायण होना' है) हो जा। इस प्रकार मेरे निमित्त कर्मों को करता हुआ भी मेरी प्राप्ति रूप सिद्धि को ही प्राप्त होगा।

अथैतदप्यशक्तोऽसि कर्तुं मद्योगमाश्रितः।
सर्वकर्मफलत्यागं ततः कुरु यतात्मवान्॥

भावार्थ- यदि मेरी प्राप्ति रूप योग के आश्रित होकर उपर्युक्त साधन को करने में भी तू असमर्थ है, तो मन-बुद्धि आदि पर विजय प्राप्त करने वाला होकर सब कर्मों के फल का त्याग कर।

श्रेयो हि ज्ञानमभ्यासाज्ज्ञानाद्ध्यानं विशिष्यते।
ध्यानात्कर्मफलत्यागस्त्यागाच्छान्तिरनन्तरम्॥

भावार्थ- मर्म को न जानकर किए हुए अभ्यास से ज्ञान श्रेष्ठ है, ज्ञान से मुझ परमेश्वर के स्वरूप का ध्यान श्रेष्ठ है और ध्यान से सब कर्मों के फल का त्याग (केवल भगवदर्थ कर्म करने वाले पुरुष का भगवान में प्रेम और श्रद्धा तथा भगवान का चिन्तन भी बना रहता है, इसलिए ध्यान से 'कर्मफल का त्याग' श्रेष्ठ कहा है) श्रेष्ठ है, क्योंकि त्याग से तत्काल ही परम शान्ति होती है।

अद्वेष्टा सर्वभूतानां मैत्रः करुण एव च।
निर्ममो निरहङ्कारः समदुःखसुखः क्षमी॥
संतुष्टः सततं योगी यतात्मा दृढ़निश्चयः।
मय्यर्पितमनोबुद्धिर्यो मद्भक्तः स मे प्रियः॥

भावार्थ- जो पुरुष सब भूतों में द्वेष भाव से रहित, स्वार्थरहित सबका प्रेमी और हेतु रहित दयालु है तथा ममता से रहित, अहंकार से रहित, सुख-दुःखों की प्राप्ति में सम और क्षमावान है अर्थात् अपराध करने वाले को भी अभय देने वाला है तथा जो योगी निरन्तर संतुष्ट है, मन-इन्द्रियों सहित शरीर को वश में किए हुए है और मुझमें दृढ़ निश्चय वाला है- वह मुझमें अर्पण किए हुए मन-बुद्धिवाला मेरा भक्त मुझको प्रिय है।

क्रमशः ...

योगजगत

लेख क्रमांक-07

क्रमशः ...

खड़े होकर किये जाने वाले आसन

8. गर्दन का व्यायाम

विधि- सीधे खड़े होकर या बैठकर गर्दन को एक बार दायें और एक बार बायें कंधे की ओर यथाशक्ति झुकायें। फिर सीधी करके एक बार ऊपर की ओर देखते हुए गर्दन को पीछे की ओर मोड़ें और फिर आगे की ओर झुकायें। अब गर्दन सीधे करके एक बार दायें अधिक से अधिक मोड़ें, फिर बायें अधिक से अधिक मोड़ें। इसके पश्चात् उल्टे-सीधे वृत्ताकार घुमायें।

लाभ- इससे गर्दन का पूर्ण व्यायाम होता है। थाइराइड आदि बीमारियां दूर होती हैं। गर्दन में लचीलापन आता है। कंठ साफ होता है। स्वर में निखार आता है।

---

9. सिर का व्यायाम

विधि- सीधे खड़े होकर या बैठकर और दोनों हाथों की उंगलियों को फंसाकर सिर के पिछले भाग पर पूरी ताक़त से दबाव दें। सिर आगे की ओर न झुके, इसके लिए सिर से पीछे की ओर दबाव दें, फिर हल्का ढीला छोड़ें और फिर पुनः दबाव दें। इस क्रम को चार से पाँच बार करें।

इसी तरह हाथों की हथेली से सिर के आगे माथे पर रखकर हाथों से पीछे की ओर दबाव दें और सिर से आगे की ओर दबाव दें।

दूसरी विधि- सिर में दाईं तरफ कान के आगे मस्तिष्क के बगल में दायीं हथेली रखकर हाथ से सिर की तरफ दबाव दें और सिर से हाथ की तरफ दबाव दें। इस प्रक्रिया को 3 से 4 बार करें। इसी प्रकार बायीं तरफ से भी करें।

लाभ- इससे मस्तिष्क को लाभ प्राप्त होता है। डिप्रेशन, सिरदर्द में लाभ मिलता है। मस्तिष्क में चेतना का संचार होता है।

10. त्रिकोणासन

विधि- दोनों पैरों को दो-तीन फुट फैलाकर खड़े हो जायें और दोनों हाथों को कंधों की सीध में फैलायें। फिर श्वास निकालते हुए दाहिने हाथ को दाहिनी तरफ झुकाकर पैर के पंजे को हाथ से छुयें और बायें हाथ को सिर के समानान्तर रखें। कमर के भाग को भी दाहिनी ओर झुकायें। कुछ सेकेण्ड रुककर श्वास भरते हुए ऊपर आयें और इसी क्रम को बाएं ओर झुकते हुए, बाएं हाथ से बाएं पैर के पंजे को स्पर्श करें और दायें हाथ को कान के बगल से सटाकर सिर के समानान्तर लेजायें। इस क्रम को दो या तीन बार दोहराएं।

लाभ- इससे पूरे शरीर में चेतना का संचार होता है व कमर, हाथ और पैरों की मांसपेशियों में ताक़त मिलती है तथा कमर का मोटापा दूर होता है।

---

11. कोणासन

विधि- पैरों को लगभग दो फिट के फासले पर करके सीधे खड़े हो जायें। इसके बाद आगे की ओर झुकते हुए दायें हाथ से बायें पैर के पंजे को स्पर्श करें और बायें हाथ को आकाश की ओर ले जायें तथा मुख को भी आकाश की ओर मोड़ें। फिर दायें हाथ को ऊपर की ओर उठायें और बायें हाथ से दायें पैर के पंजे को स्पर्श करें। इस प्रक्रिया को 10 से 20 बार करें।

लाभ- इससे पूरे शरीर का व्यायाम होता है, शरीर में चैतन्यता आती है तथा मोटापा कम होता है।

क्रमशः ...

जनजागरण

शक्ति-सामर्थ्य को घटाती है ईर्ष्या-द्वेष की भावनाः बहन पूजा शुक्ला जी

सिद्धाश्रम चेतना आरूणी जी

दमोह। भगवती मानव कल्याण संगठन एवं पंचज्योति शक्तितीर्थ सिद्धाश्रम ट्रस्ट के संयुक्त तत्त्वावधान में दिनांक 01-02 जनवरी 2024 को ग्राम-धनगौर (गुंजी), ज़िला-दमोह में 24 घंटे का श्री दुर्गाचालीसा अखण्ड पाठ सम्पन्न किया गया।

समापन अवसर पर संगठन की केन्द्रीय अध्यक्ष शक्तिस्वरूपा बहन सिद्धाश्रमरत्न पूजा शुक्ला जी ने उपस्थित भक्तों को सम्बोधित करते हुए कहा कि ''अंग्रेज़ी कैलेण्डर का नया वर्ष प्रारम्भ हो गया है और जब भी कोई नया क्रम प्रारम्भ होता है, तो हम प्रकृतिसत्ता और गुरुसत्ता की स्तुति करके आशीर्वाद प्राप्त करते हैं। लेकिन, भौतिकता में लिप्त लोग नाच-गाने, नशे व अश्लीलता

में, विकारों में समय नष्ट करते हैं, जो बहुत निन्दनीय है।

अपनी शक्ति-सामर्थ्य को व्यर्थ के कार्यों में मत गवाएं, इसे बचाकर रखें और जहाँ भी अनीति-अन्याय-अधर्म हो रहा हो, वहाँ पर लगाएं, जिससे पीड़ित मानवता का कल्याण हो सके। अपने मन में ईर्ष्या-द्वेष की भावना किसी के प्रति न रखें, क्योंकि यह भावना शक्ति-सामर्थ्य को घटाती है। गुरुवरश्री ने कहा है कि राम-राम कहने से कल्याण नहीं होने वाला है, बल्कि इसके लिए श्री राम के द्वारा बताए गए रास्ते पर चलना पड़ेगा। गुरुवर कहते हैं कि अपनी आत्मा की जननी को जानो, अपने मैं को जानो। आपकी आत्मा की जननी माता जगदम्बे हैं और उन्हीं की साधना-आराधना में जीवन का उद्धार हो सकता है।''

जो अपने आपको साध ले, सच्चे मायनों में वही साधक है: अजय अवस्थी जी

इन्दौर। सद्गुरुदेव परमहंस योगीराज श्री शक्तिपुत्र जी महाराज के आशीर्वाद से दिनांक 6-7 जनवरी 2024 को श्री वैष्णव नामदेव, क्षीपा समाज धर्मशाला, श्रेयस नगर, छोटा बांगड़दा रोड, ज़िला-इन्दौर में 24 घंटे का श्री दुर्गाचालीसा अखण्ड पाठ सम्पन्न किया गया।

समापन अवसर पर भगवती मानव कल्याण संगठन की केन्द्रीय अध्यक्ष सिद्धाश्रमरत्न शक्तिस्वरूपा बहन पूजा शुक्ला जी ने उपस्थित भक्तों को सम्बोधित करते हुए कहा कि ''राजसत्ताएं, तथाकथित राजनेता देश को नशे जैसी महामारी की ओर लगातार ढकेल रहे हैं। आप लोगों को माँग करनी चाहिए कि देश को, प्रदेश को पूर्णरूपेण नशामुक्त घोषित किया जाए, नशे का कारोबार बन्द किया जाए। ये राजनेता स्वच्छता की बात करते हैं; अरे, जब इनका हृदय ही स्वच्छ नहीं है, तो बाह्य स्वच्छता किस काम की? पहले अपने अन्दर के मैल को, अपने हृदय को साफ करें, फिर स्वच्छता अभियान चलाने की बात करें, तो अच्छा होता।''

संगठन के केन्द्रीय महासचिव सिद्धाश्रमरत्न अजय अवस्थी जी ने कहा कि ''परम पूज्य गुरुवरश्री ने आप

सभी लोगों को अपना आशीर्वाद प्रदान किया है। आप सभी लोग नशे-मांसाहार से मुक्त चरित्रवान् व चेतनावान् जीवन जीने के साथ ही पुरुषार्थ और परोपकारमय जीवन को अंगीकार करें। इसी में सच्चा सुख निहित है। सभी के अंदर संयम होना चाहिए। केवल पूजा-पाठ कर लेने से कुछ नहीं होता। साधक कौन है? जो अपने आपको साध ले; काम-क्रोध-लोभ-मोह को साध ले और जिसने स्वयं को साध लिया, वही सच्चे मायने में साधक है।''

सिद्धाश्रम चेतना आरुणी जी ने कार्यक्रम में उपस्थित जनसमुदाय का आवाहन करते हुए कहा कि ''दिनांक 10-11 फ़रवरी 2024 को बिलासपुर, छत्तीसगढ़ में भगवती मानव कल्याण संगठन के द्वारा शक्ति चेतना जनजागरण शिविर का आयोजन किया गया है, जिसमें आप सभी लोग सपरिवार पहुँचकर गुरुवरश्री के अमृततुल्य चिन्तनों और दिव्य आरतियों का लाभ अवश्य लें।''

उद्बोधनक्रम के पश्चात् सभी भक्तों ने शक्तिजल और प्रसाद प्राप्त किया।

ग़लत कार्य करने का दण्ड भोगना ही पड़ेगा: अजय अवस्थी जी

हैदराबाद। नशे-मांसाहार से मुक्त चरित्रवान् समाज के निर्माण के लिए देशस्तर पर चल रहे जनजागरण के क्रम में दिनांक 20-21 जनवरी को न्यू दुर्गाकॉलोनी, मेलार देवपली, कांटेदान, हैदराबाद, तेलंगाना में 24 घंटे का श्री दुर्गाचालीसा अखण्ड पाठ भगवती मानव कल्याण संगठन एवं पंचज्योति शक्तितीर्थ सिद्धाश्रम ट्रस्ट के संयुक्त तत्त्वावधान में सम्पन्न किया गया।

समापन बेला पर संगठन के केन्द्रीय महासचिव सिद्धाश्रमरत्न अजय अवस्थी जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि ''आत्मा की अमरता और कर्म की प्रधानता एक ध्रुवसत्य है। यदि इस सत्य को सभी लोग स्वीकार कर लें, तो जो चारोंओर भय का वातावरण है, उसे समाप्त होने में देरी नहीं लगेगी। जब आत्मा अजर-अमर-अविनाशी है, तो फिर भय कैसा और किस बात का भय? इसी तरह यह कर्मप्रधान सृष्टि है और जो जैसा कर्म करेगा, उसी के अनुरूप उसे फल प्राप्त होगा। यदि कोई ग़लत कार्य करेगा, तो उसे दण्ड भोगना ही पड़ेगा। अत: नशे-मांसाहार से मुक्त चरित्रवान्, चेतनावान्, पुरुषार्थी

और परोपकारी जीवन जिएं।

भारत ही नहीं, बल्कि पूरी दुनिया में, जो नशे से ग्रसित हैं और नशे को छोड़ना चाहते हैं, तो पंचज्योति शक्तितीर्थ सिद्धाश्रम आएं और सद्गुरुदेव श्री शक्तिपुत्र जी महाराज से आशीर्वाद प्राप्त करें। यहाँ आने वाले 100 में से 99 व्यक्ति नशा छोड़कर जाते हैं। यहाँ कोई पर्ची नहीं कटती और न ही किसी कार्य के लिए कोई शुल्क लिया जाता है। सिद्धाश्रम में रहने व भोजन तक की व्यवस्थाएं नि:शुल्क हैं। यदि आप नशे से ग्रासित हैं और नशा छोड़ने की थोड़ी भी इच्छा मन में है, तो सिद्धाश्रम आएं, निश्चित ही आपका नशा छूट जायेगा।'

उद्बोधनक्रम के पश्चात् सभी भक्तों ने शक्तिजल और प्रसाद प्राप्त करके जीवन को कृतार्थ किया।

आत्मज्ञान

बुद्धिमत्ता की परीक्षा

एक राजा था और उसका काफी बड़ा साम्राज्य था। उसके राज्य में प्रजा खुशहाल जीवन व्यतीत कर रही थी। राजा को अपने उत्तराधिकारी की तलाश थी। उसके तीन पुत्र थे। राजा इस पुरानी परंपरा को नहीं निभाना चाहता था कि सबसे बड़े बेटे को ही गद्दी पर बिठाया जाए। वह सबसे बुद्धिमान और योग्य बेटे को सत्ता सौंपना चाहता था। अतः राजा ने उत्तराधिकारी के लिए तीनों की परीक्षा लेने का निर्णय लिया।

राजा ने हर पुत्र को सोने का एक-एक सिक्का देते हुए कहा कि 'वे इससे ऐसी चीज खरीदें, जो पुराने महल को भर दे।' पहले बेटे ने सोचा कि पिताजी तो सठिया चुके हैं। इस थोड़े से पैसे से इस महल को किसी चीज से कैसे भरा जा सकता है? इसलिए वह एक मयखाने में गया, शराब पी और सिक्के को खर्च कर डाला।

राजा के दूसरे बेटे ने इससे भी आगे सोचा। वह इस नतीजे पर पहुंचा कि शहर में सबसे सस्ता तो कूड़ा-कचरा ही है। इसलिए उसने महल को कचरे से भर दिया। तीसरे बेटे ने दो दिन तक इस पर चिंतन-मनन किया कि महल को केवल एक सिक्के से कैसे भरा जा सकता है? वह वाकई कुछ ऐसा करना चाहता था, जिससे पिता की उम्मीद पूरी होती हो। उसने मोमबत्तियां और लोबान को खरीदा और फिर पूरे महल को रोशनी और सुगंध से भर दिया। अन्ततः इस तीसरे बेटे की बुद्धिमानी से खुश होकर राजा ने उसे अपना उत्तराधिकारी बनाया।

ॐ शक्तिपुत्राय गुरुभ्यो नमः माँ ॐ जगदम्बिके दुर्गायै नमः

पंचज्योति शक्तितीर्थ सिद्धाश्रम ट्रस्ट के आश्रम निर्माण, समाजसेवा एवं जनजागरण अभियान में सहभागिता हेतु अपनी मासिक आय की पांच प्रतिशत राशि का समर्पण निम्नवत् बैंक खाते में करें :

नाम – पंचज्योति शक्तितीर्थ सिद्धाश्रम ट्रस्ट
बैंक – भारतीय स्टेट बैंक, शाखा – ब्यौहारी (06075)
अकाउण्ट नम्बर – 35030046927, आई.एफ.एस. कोड – SBIN0006075

विशेष समर्पण राशि खाते में जमा करने के पश्चात् निम्नांकित मोबाइल नम्बरों में से किसी एक पर समर्पण राशि का पूरा विवरण (समर्पणकर्ता का नाम, समर्पणकर्ता के पिता या माता का नाम, सम्पूर्ण पता, पैन नम्बर या आधार नम्बर, जमा की गई राशि व तिथि) अवश्य सूचित करें। **मोबाइल नम्बर – 9171337768, 9981005001, 7693853203**

नोट – यह सुविधा मात्र समस्त भारतवासियों के लिए ही है। विदेश से जमा की गई राशि स्वीकार नहीं की जाएगी।

आयुर्वेद लेखमाला क्र.-194

प्राकृतिक विटामिन्स और उनके स्रोत (भाग-3)

गतांक से आगे...

13. विटामिन डी (एण्टीरिकेटिक विटामिन)– विटामिन डी शरीर के लिए महत्त्वपूर्ण विटामिन है। विटामिन डी के सहयोग से, शरीर कैल्शियम और फॉस्फोरस का अवशोषण करता है और हड्डियों को मजबूत बनाता है।

विटामिन डी की कमी से बच्चों में रिकेट्स रोग और वयस्कों में ऑस्टियो मवेशिया रोग होने का खतरा बढ़ जाता है। बच्चों की शारीरिक वृद्धि में रुकावट और हड्डियां कमजोर व बेढंगी होने लगती हैं। आर्थराइटिस, ऑस्टियोपेनिया, गठिया, दांत सम्बन्धी परेशानी व मांसपेशियों में ऐंठन आदि परेशानियां बढ़ जाती हैं। बुजुर्ग पुरुष, महिलाओं की हड्डियां भुरभुरी व कमजोर (ऑस्टियोपोरोसिस) हो जाती हैं।

प्रमुख स्रोत– विटामिन डी सूर्योदय कालीन धूप, दूध, मेथी और मशरूम में पर्याप्त मात्रा में पाया जाता है।

14. विटामिन ई (एण्टीस्टटलिटी विटामिन)– विटामिन ई और सेक्स हार्मोन शरीर की प्रजनन शक्ति के विकास, गर्भधारण, भ्रूणरक्षा में सहयोगी है, साथ ही लाल रक्तकण के निर्माण और विटामिन ए की रक्षा में भी सहयोगी है।

विटामिन ई की कमी से हृदय रोग, माहवारी की अनियमितता, माहवारी में अधिक रक्तस्राव, दूध बनने में कमी, बांझपन, नपुंसकता, गर्भपात, मांसपेशियों की कमजोरी आदि लक्षण दिखने लगते हैं। विटामिन ए तथा ई महत्त्वपूर्ण एण्टीऑक्सीडेंट हैं, जो बुढ़ापे को बचाते हैं।

मुख्य स्रोत– विटामिन ई हरी सब्जियां, गेहूँ, अंकुरित अन्न, गाजर आदि में अधिक मात्रा में पाया जाता है।

15. विटामिन के (एण्टीहिमोरेजिक, कोएगुलेशन विटामिन)– विटामिन के ऊतकों को क्रियाशील तथा रक्त को जमाने का कार्य करता है। विटामिन ए, डी, ई, के वसा में घुलनशील है, इसकी कमी से रक्तस्राव तथा पीलिया का खतरा बढ़ जाता है।

प्रमुख स्रोत– विटामिन के सीजनल फल, हरी सब्जियां और अंकुरित अन्न में अधिक मात्रा में पाया जाता है।

16. विटामिन पी– विटामिन पी शरीर की रक्तवाहिनियों को लचीला बनाये रखने में सहयोगी है तथा रक्तचाप व कैंसर के लिए भी उपयोगी है।

विटामिन पी की कमी से शरीर में कहीं से भी रक्तस्राव का होना, रक्तचाप का बढ़ना जैसी परेशानी हो सकती है।

मुख्य स्रोत– सभी तरह के खट्टे फलों में पाया जाता है।

17. विटामिन एफ –विटामिन एफ शरीर के लिए आवश्यक विटामिन है, जो शरीर के अंगों की सुरक्षा करता है।

इसकी कमी से एक्जिमा, श्वासकष्ट, गुर्दे, सन्धिवात, हृदय और रक्तवाहिनी में कोलेस्ट्रॉल जमने लगता है

मुख्य स्रोत– घानी से निकले हुए तेल में प्रचुर मात्रा में पाया जाता है।

बृजपाल सिंह चौहान (गुरुसेवक)
वैद्यविशारद, आयुर्वेदरत्न
www.bschauhan09.blogspot.com

माह फ़रवरी–मार्च 2024

महत्त्वपूर्ण व्रत एवं पर्व

दिनांक	वार	व्रत/पर्व
03 फ़रवरी	शनिवार	कृष्ण पक्ष अष्टमी (शक्ति साधना दिवस)
09 फ़रवरी	शुक्रवार	स्ना. दा. श्रा. अमावस्या, मौनी अमावस्या
10 फ़रवरी	शनिवार	गुप्त नवरात्रारंभ
14 फ़रवरी	बुधवार	बसंत पंचमी
17 फ़रवरी	शनिवार	शुक्ल पक्ष अष्टमी (गोसेवा समर्पण दिवस) पूजनीया शक्तिमयी माता जी का जन्मदिवस
18 फ़रवरी	रविवार	गुप्त नवरात्र समाप्त
24 फ़रवरी	शनिवार	स्ना. दा. व्रत पूर्णिमा, माघी पूर्णिमा
03 मार्च	रविवार	कृष्ण पक्ष अष्टमी (शक्ति साधना दिवस)
08 मार्च	शुक्रवार	महाशिवरात्रि व्रत
10 मार्च	रविवार	स्ना. दा. श्रा. अमावस्या
17 मार्च	रविवार	शुक्ल पक्ष अष्टमी (गोसेवा समर्पण दिवस)
24 मार्च	रविवार	होलिका दहन, व्रत पूर्णिमा
25 मार्च	सोमवार	होली उत्सव, स्ना. दा. पूर्णिमा
27 मार्च	बुधवार	भाईदोज
30 मार्च	शनिवार	रंगपंचमी

सिद्धाश्रम पत्रिका - सदस्यता विवरण

आत्मीय बन्धु,

यदि आप त्रिशक्ति प्रोडक्ट्स प्रा.लि. के द्वारा प्रकाशित पूर्ण अध्यात्मिक एवं समसामयिक मासिक 'सिद्धाश्रम पत्रिका' के सदस्य बनना चाहते हैं, तो सम्बन्धित विवरण प्रस्तुत है -

1- पत्रिका की सदस्यता को तीन श्रेणियों में विभक्त किया गया है -
वार्षिक सदस्यता शुल्क - रुपये **360**, दसवर्षीय सदस्यता शुल्क- रुपये **3400**, बीसवर्षीय सदस्यता शुल्क- रुपये **6700**
(उपर्युक्त सदस्यता राशि जमा करने पर पत्रिकाएँ साधारण डाक द्वारा प्राप्त की जा सकेंगी, कोरियर या रजिस्टर्ड डाक द्वारा मंगाने पर अतिरिक्त शुल्क अलग से देय होगा।)

2. सदस्यता शुल्क निम्नांकित बैंक अकाउण्ट में जमा करा सकते हैं-
नाम- **त्रिशक्ति प्रोडक्ट्स प्राइवेट लिमिटेड** अकाउण्ट नम्बर- **34406155612**
आई.एफ.एस. कोड– SBIN0006075 बैंक- **स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया** ब्रांच- **ब्यौहारी**
(बैंक खाते में राशि डिपॉजिट करने के पश्चात् निम्न मोबाइल नम्बरों में से किसी एक पर अपना नाम, पूरा पता, पिनकोड, सम्पर्क सूत्र सहित बैंक डिपॉजिट की डिटेल्स अवश्य नोट करायें- **9111347734, 7241173130**)
(विशेष ध्यान दें कि इस बैंक खाते में केवल सिद्धाश्रम पत्रिका की सदस्यता राशि ही जमा करें ।)

3. सदस्यता शुल्क राशि नकद या मनीऑर्डर द्वारा भी जमा कराया जा सकता है। मनीऑर्डर को सिद्धाश्रम पत्रिका, त्रिशक्ति प्रोडक्ट्स प्रा.लि., पंचज्योति शक्तितीर्थ सिद्धाश्रम, पो.- मऊ, तह.- ब्यौहारी, ज़िला - शहडोल (म.प्र.)- **484774** के पते पर भेजा जाना चाहिये।

4. सदस्य अपना नाम और पूरा पता कृपया स्पष्ट अक्षरों में पिन कोड एवं सम्पर्क-सूत्र के साथ अवश्य भेजें।

5. त्रिशक्ति प्रोडक्ट्स प्रा.लि. किसी भी डाक के विलंब, परिवहन क्षति या किसी भी लिपिकीय त्रुटि के लिये जिम्मेदार नहीं होगा।

भावगीत

त्याग–भाव

इस जग की बस एक कहानी सब ही तो कहते हैं,
खाओ पीओ मौज़ करो, सब इसमें ही रहते हैं।
भोगवाद है यही, किन्तु यह सत्य नहीं जीवन है,
क्षण-क्षण जिसमें क्षरण भरा हो, जीवन नहीं मरण है।।

यों तो मृत्यु अवश्यम्भावी, जन्मा जो मरता है,
भला-बुरा जैसा भी होता, करता जो भरता है।
रह-रहकर कोई शक्ति सभी को यह इंगित करती है,
सुख-सुविधा विश्राम नहीं, यह बतलाती रहती है।।

जब उसकी यह बात हमारे जीवन में आती है,
समझ लीजिए सच की धारा साफ नज़र आती है।
तभी मनुज अपने अन्दर में घुसकर देखा करता है,
उस विराट के दर्शन अद्‌भुत अन्तर में करता है।।

तब उसकी इस जग के प्रति ही दृष्टि बदल जाती है,
संसारी जीवन भर की यह सृष्टि बदल जाती है।
तब वह त्याग भाव से जग का भोग किया करता है,
सेवा कर मानवजीवन का योग किया करता है।।

प्रकृति सत्य के प्रति उसका फिर प्रेम बदल जाता है।
कण-कण में हर क्षण में अपना रूप नज़र आता है।।

रामबहादुर पाण्डेय
बदायूं (उ.प्र.)